विनोबा-चित्रावली

(संत विनोबा के जीवन सम्बन्धी तथा भूदान-यात्रा के चित्र, उनकी संक्षिप्त जीवनी, प्रातःकाल व सायंकाल की सम्पूर्ण प्रार्थना, दिव्य वाणी आदि अनेक उपदेशपूर्ण बातों का संग्रह)

अहिंसक क्रांति के पथ पर

लेखक, सपादक तथा प्रकाशक

जीतमल लूणिया, संचालक

हिन्दी साहित्य मन्दिर, अजमेर

चौथी बार
सन् १९५६

इस पुस्तक के पढ़ने से आपका जीवन उन्नत तथा सदाचारी बनेगा

मूल्य प्रचारार्थ
।।।)

अपने साथियों से कहिये कि वे भी एक प्रति खरीदें

गांधीजी के
आध्यात्मिक उत्तराधिकारी

मेरी प्रार्थना है कि अब देने का ज़माना आया है। ईश्वरीय प्रेरणा है । आप सब लोग दिल खोलकर दीजि भूदान, सम्पत्तिदान, बुद्धिदान, श्रमदान, जो कुछ भी दे दीजिए । देने से एक दैवी सम्पत्ति प्रकट होती है। सामने आसुरी सम्पत्ति टिक नहीं सकती ।

दान देने में भ्रातृभाव की तथा मैत्री की भावना प्रकट है। जहाँ दूसरों की फ़िक्र करने की भावना जागती रहती है, समत्वबुद्धि प्रकट होती है, वहां वैरभाव नहीं टिक सक पुण्य में ताक़त होती है, पाप में कोई ताक़त नहीं होती। प्र में शक्ति होती है, अंधकार में कोई शक्ति नहीं होती।

यह भूदान-यज्ञ जीवन-परिवर्तन का प्रयोग है। यदि हम समाज-रचना में फ़ौरन परिवर्तन नहीं होता है तो हम नष्ट हो जायंगे, अतएव समय रहते चेत जाइये । विन

मुद्रक—सुरेन्द्र प्रिंटर्स प्राइवेट लि० दिल

नम्र निवेदन

आज से पांच वर्ष पूर्व जब मैंने 'गांधी चित्रावली' का प्रकाशन किया था उसी समय से यह विचार मेरे मन में था कि यदि देश के अन्य महापुरुषों के जीवन की झांकियां भी चित्रों द्वारा सस्ते मूल्य में निकाली जावें तो सामान्य स्थिति के पाठकों के लिये बड़ी लाभदायक और प्रेरणात्मक होगी।

विनोबा युग-पुरुष हैं। उनकी साधना महान् है। वे गांधीजी के निष्ठावान अनुयायी रहे हैं। उन्हें गांधीजी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। दीर्घकाल से वे एकान्त साधना में लीन थे। अब चार पांच वर्ष से वे प्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में आगये हैं और इस अल्पकाल में ही उन्होंने भारत के नगरों और गांवों में एक नवीन चेतना, एक नवीन जागृति उत्पन्न कर दी है। सारा भारत आज उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। मेरा विचार था कि 'गांधी-चित्रावली' की भांति इस पुस्तक में विनोबाजी के बाल्यकाल से अब तक के चित्र यथाक्रम दिये जावें, लेकिन विनोबाजी प्रारम्भ से ही इतने एकान्तवासी रहे हैं कि उनकी विभिन्न अवस्थाओं और कार्यों के चित्र बहुत खोजने पर भी नहीं मिलते, अतः भूदान-यज्ञ की यात्रा में अनेक स्थानों पर जो चित्र लिये गये हैं, उन्हीं में से सर्वोत्तम चित्र इस पुस्तक में एकत्र किये गये हैं। इस संग्रह में कर्मयोगी, चिंतक, ऋषि, श्रम-प्रतिष्ठापक, भूदान-यज्ञ के महान् प्रवर्तक आदि अनेक रूपों में विनोबाजी के जीवन की मनोहर झांकियां पाठकों को देखने को मिलेंगी। चित्रों के अलावा अन्त में विनोबाजी की संक्षिप्त जीवनी, उनकी सुबह शाम की प्रार्थना, उनके चुने हुए विचारों का संकलन भी दिया गया है।

लगभग एक वर्ष के परिश्रम से यह पुस्तक तैयार हो सकी है। इसके लिये मुझे हैदराबाद से लेकर बिहार प्रांत तक के लम्बे प्रदेश की यात्रा करनी पड़ी है और काफी खर्च करना पड़ा है। फिर भी इसका मूल्य मैंने काफी सस्ता रखा है ताकि यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय परिवार में पहुंच जाय।

इस पुस्तक की तैयारी में भाई यशपालजी जैन व भाई मार्तण्डजी उपाध्याय से बड़ा सहयोग मिला है, इसके लिये मैं उनका बड़ा आभार मानता हूं। इसके अलावा श्री गोकुलजी बजाज ने अपने संग्रह में से लगभग २५ चित्र, वीरेंद्रजी जैन ने १० चित्र तथा "हिन्दुस्तान टाइम्स" ने १० चित्र

तथा कई अन्य सज्जनों ने एक-एक दो-दो चित्र देकर इसके संकलन में सहायता दी है, उसके लिये मैं उन सबका बड़ा अनुग्रहित हूँ।

निवेदक—जीतमल लूणिया।

पोस्टेज खर्च में रियायत

आजकल पोस्टेज खर्च बहुत बढ़ गया है। चाहे एक पुस्तक मंगावें, चाहे अधिक, नौ आने वी. पी पोस्टेज रजिस्ट्री खर्च तो लगता ही है, इसके अलावा वजन के अनुसार प्रति पांच तोले पर एक आना पोस्टेज खर्च और बढ़ता जाता है। इस तरह एक दो पुस्तकें मंगाने में काफ़ी खर्च पड़ जाता है। हमारे यहां से अब तक (१) **गांधी चित्रावली** (जन्म से लगाकर मृत्यु तक के लगभग १०० चित्र, जीवनी आदि अनेक बातों का संग्रह) **मूल्य १)**, (२) **रामनाम की महिमा** (लेखक महात्मा गांधी) **मूल्य १)**, (३) **नेहरू चित्रावली** (पं० जवाहरलालजी नेहरू के जन्म से लगाकर अब तक के ८६ चित्र तथा जीवनी) **मूल्य १)** (४) **विनोबा चित्रावली** (यह पुस्तक तो आपके हाथ में ही है) **मूल्य ॥)** (५) **तपोधन विनोबा** (लेखक—श्री बाबूराव जोशी एम. ए. साहित्यरत्न तथा भूमिका लेखक—बाबू जयप्रकाशनारायण—बड़ी खोज और परिश्रम के साथ यह बड़ी जीवनी प्रामाणिक रूप से लिखी गई है—अभी तक ऐसी जीवनी नहीं निकली) **मूल्य १॥)**, (६) **स्कूल में फलबाग** (बहुत कम खर्च में फलों का बगीचा लगाने की विधि) **मूल्य १॥)** (७) **विश्व की महान् महिलाएँ** (ले० श्रीमती शचीरानी गुर्टू एम. ए.) **सचित्र मूल्य २)** ये सात पुस्तकें निकाली हैं। इनके अलावा पूज्य विनोबाजी व गांधीजी की सब पुस्तकें तथा सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली की सब पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं। आप कम से कम १०) या अधिक की पुस्तकें एक साथ मंगावेंगे तो आधा पोस्टेज खर्च आपका माफ़ होगा। यदि २०) या अधिक की पुस्तकें मंगावेंगे तो भेजने का कुल खर्चा हमारे जुम्मे होगा पर आप अपने पूरे पते के साथ अपने यहां का या अपने नजदीक के रेल्वे स्टेशन का नाम ज़रूर लिखें। इसके अलावा पोस्टेज खर्च की यह रिआयत आधा रुपया या कम से कम २) पेशगी भेजने वालों को ही मिलेगी यह बात ध्यान में रखें। बिना पेशगी रकम आये पोस्टेज की रिआयत नहीं मिलेगी। हिंदी की जो भी [illegible] चाहिये हमारे यहां आर्डर भेज दें।

पुस्तकें मंगाने का पता—**हिन्दी साहित्य मंदिर, अजमेर**

(१) दरिद्रनारायण के अनन्य पुजारी तथा भूदान-यज्ञ के प्रवर्तक
संत विनोबा
(६२ वें वर्ष में पदार्पण : ११ सितंबर, ५६)

(२)

कर्मयोगी

"ग़रीब और अमीर में एकता लाने की सामर्थ्य जितनी चरखे में है, उतनी और किसी में नहीं है"

—[illegible]

(३)

(२)

विचारक

"जहाँ सच्ची बुद्धि है, वहाँ सच्ची भावना है"

लेखक

लेखन

(१०)   स्वावलम्बन और शरीर-श्रम का आदर्श
विनोबाजी अपना विस्तर अपने सिर पर लेकर चलने की तैयारी में,
ताईजी, मृदुला व दूसरे साथियों ने भी अपना-अपना
सामान साथ में ले लिया है

(११)   दरिद्र-नारायण के घर में
विनोबाजी गरीबों के घरों में जाकर
उनके सुख दुख की बातें सुन रहे हैं

भूदान-यज्ञ के दान-पत्र का नमूना

मैं/हम..........गाँव..........तहसील............
जिला.........सूबा........का/के निवासी मेरी हमारी माल की
की कुल......एकड जमीन में से, जिन पर पूरा कानूनी हक मेरा/
हमारा है, खुश्की जमीन........एकड़.......... डेसिमल......
सर्वे नंबर.........., तरी जमीन... .... ..एकड .. ..
डेसिमल......सर्वे नम्बर......गाँव.........नंबर......
तहसील........ जिला.... ......सूबा ....वाली
जमीन पूज्य विनोबाजी द्वारा शुरू किये गये भू-दान-यज्ञ में विचार-पूर्वक अपनी राजी खुशी से दान दे रहा हूँ/रहे हैं। इस दान में दी हुई जमीन पर आइन्दा मेरा/हमारा या मेरे/हमारे खानदान या वारिसान का कोई हक या दावा नहीं रहेगा। यह जमीन गरीबों की भलाई के लिये पूज्य विनोबाजी चाहें जिस तरह उपयोग में ला सकते हैं।

मुकाम.............पोस्ट......जिला........ .. तारीख..
दाता का पूरा नाम, पता व हस्ताक्षर व तारीख..............
गवाह का पूरा नाम व पता, हस्ताक्षर व तारीख.............
तफसील जमीन
गाँव.......... सब रजिस्ट्री............ चौहद्दी :
तौजी नं०.. .. सब डिवीजन.......... उत्तर........
थाना........ जिला............. दक्षिण........
थाना नं०...... राज्य.............. पूर्व..........
परगना........ खाता नं०............ पश्चिम..... ..
पोस्ट....... खेसरा नं०...........

(१०)   स्वावलम्बन और शरीर-श्रम का आदर्श
विनोबाजी अपना विस्तर अपने सिर पर लेकर चलने की तैयारी में,
ताईजी, मृदुला व दूसरे साथियों ने भी अपना-अपना
सामान साथ में ले लिया है

(११)   दरिद्र-नारायण के घर में
विनोबाजी गरीबों के घरों में जाकर
उनके सुख दुख की बातें सुनते हैं

(१२) तेलंगाना प्रदेश की यात्रा
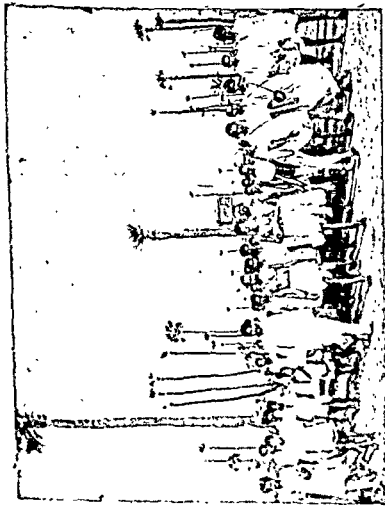
भूदान-यज्ञ का प्रारम्भ तेलंगाना प्रान्त के पोचमपल्ली ग्राम में हुआ था

(१३) तैलंगाना के पहाड़ी इलाके में कार्यकर्ताओं के बीच में

(१४) नदी पार कर रहे हैं

...के पहाड़ी इलाके में कार्यकर्ताओं के साथ

(१५) प्रातःकाल ठीक चार बजे यात्रा का प्रारम्भ
सुबह की प्रार्थना चलते हुए करते जाते हैं

(१६) जंगलों के बीच
विनोबाजी के सहायक मंत्री लक्ष्मीनारायण भारतीय हाथ में लालटेन लिए हुए

...पार कर रहे हैं

(१७) मैदान में

विनोबाजी बड़ी तेजी से चल रहे हैं

(१८) रास्ते में नाश्ता (जलपान)

(११) हर समय एक ही धुन, एक ही ध्यान

(२०) पैर में चोट, फिर भी रुकना कैसा

(२१) चोट लग जाने से कुर्सी पर यात्रा

(२४)

फिर वही अखंड पैदल यात्रा

"जब तक मैं कामयाब नहीं होता, तब तक मैं हारूंगा नहीं"

२५)

वाल-गोपालों के वीच

गांव के वच्चों ने विनोवाजी को घेर लिया है । वे भी पैदल यात्रा में साथ दे रहे हैं

गांव में प्रवेश
दाईं ओर महादेवी ताई और बाईं ओर बाबा राघवदास

(३१) विश्राम के समय भी वही वातचीत, वही चिन्तन

रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं से वातचीत

(३३)

(३४)

विने

(३३) पत्र-प्रतिनिधियों के बीच

(३४) विनोबाजी को उनके मंत्री श्री दामोदरदास मूंदड़ा अखबार पढ़कर सुना रहे हैं।

(३५)
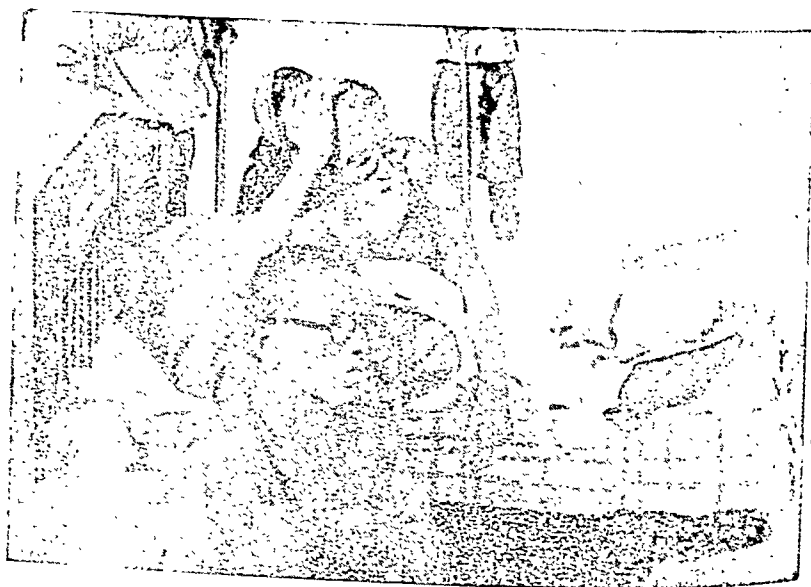
दोपहर को थोड़ा आराम

(३६) आई हुई डाक देख रहे हैं

(३७) उत्त

(३८) तीसरे..

(३७) उत्तर प्रदेश के प्रधान मंत्री पं० गोविन्दवल्लभ पत से चर्चा
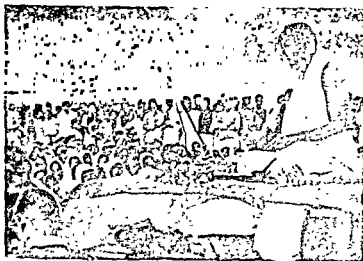
(३८) तीसरे पहर चरखा-यज्ञ, दैनिक कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण अंग
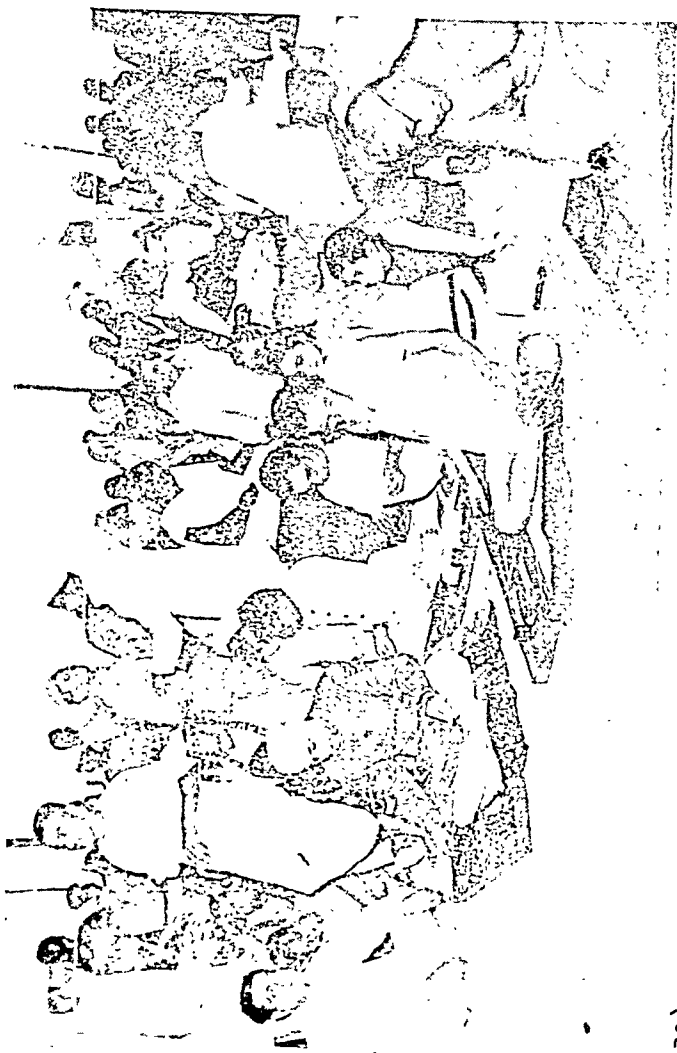
(३९)

राजघाट पर चरखा-यज्ञ

विनोबाजी के दाईं ओर पं० जवाहरलाल नेहरू व बाईं ओर श्री शंकररावदेव चरखा चला रहे हैं
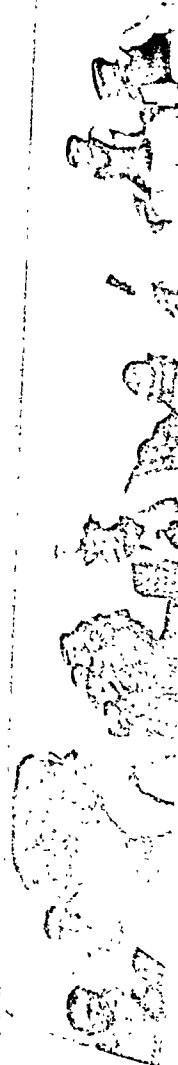
(४०) राजघाट में बापू की समाधि पर—गांधीजी का स्मरण करते ही विनोबाजी की आंखों से अश्रुधारा बह चली

(४१)

चरखा-यज्ञ के बाद फिर वही भूदान-यज्ञ का उपदेश

दरिद्रनारायण के लिए कुछ-न-कुछ देना ही चाहिए। भूमिदान, संपत्तिदान, बुद्धिदान, सब ईश्वर की स्तुति है

(४२) "लाओ मेरा हिस्सा"

एक जमीदार से विनोबाजी का प्रेमपूर्ण अनुरोध

(४३) "लाओ भाई, आप भी दो"

एक दूसरे बड़े ज़मीदार से विनोबाजी का वही अनुरोध

(४४)

शरीर-श्रम के प्रतिष्ठापक

विनोबा केवल उपदेशक नहीं, शरीर-श्रम के भी आराधक हैं और उनका श्रम उत्पादक होना है। अब उन्होंने अपने दैनिक कार्यक्रम में बीहड़ ज़मीन को सम करने का कार्य भी शामिल कर लिया है

(४५) पृथ्वीपुत्र विनोबा
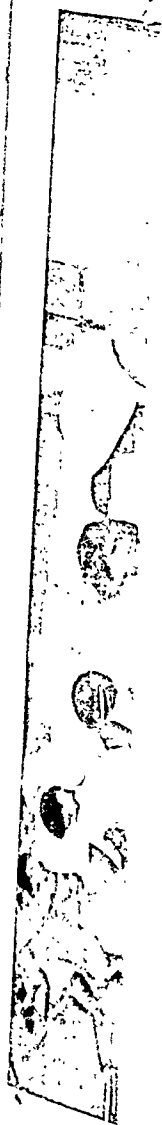
शरीर-श्रम के महान कार्य में सब साथ है

(४६) प्रार्थना में तल्लीन विनोबा——सायंकालीन प्रार्थना तथा प्रवचन का दृश्य

विनोबाजी प्रतिदिन शाम को गांधीजी की तरह सामूहिक प्रार्थना करते हैं; हजारों की भीड़ उसमें भाग लेती है
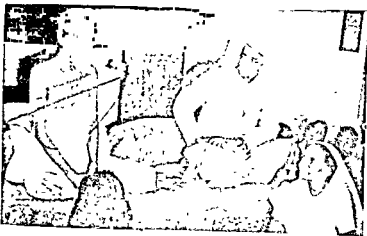
(४७) बिहार के गवर्नर श्री रंगनाथ दिवाकर तथा श्री जानकीदेवी बजाज विनोबाजी का प्रवचन सुन रहे हैं

श्री जानकीदेवीजी भी बहनों को आभूषण दान करने की प्रेरणा कर रही है
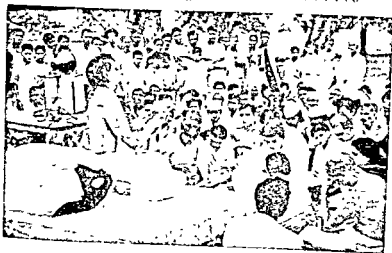
(४८) सम्पत्तिदान की नई प्रेरणा

संपत्तिदान भी भूदान-यज्ञ का एक आवश्यक अंग है

बापूजी विनोबाजी से किसी गंभीर विषय पर विचार कर रहे हैं।
पास में राजेन्द्र बाबू भी बैठे हैं

दो महापुरुषों की बातचीत

(५२)

भारत की दो विभूतियां : विनोबा व नेहरू

(५३)

सर्वोदय सम्मेलन में

सर्वोदय सम्मेलन, बोधगया में आचार्य विनोबा के साथ नेहरू जी बातचीत कर रहे हैं। बाईं ओर भारत के उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन बैठे हैं।
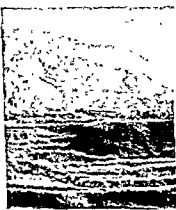
(५४) भूदान-यज्ञ की अद्भुत ईश्वरीय प्रेरणा

११ सितम्बर सन् १९५२ को काशी विद्यापीठ में श्री विनोबाजी ने यह संकल्प किया कि, जबतक भूमिदान-यज्ञ का प्रश्न हल नहीं होगा मैं अपने आश्रम में नहीं जाऊंगा। विलक्षण संयोग की बात है कि इसी तारीख को हिमाचल प्रदेश के गेहड़ू ग्राम में महन्त ऊधोदासजी ने अपनी एक लाख की भारी संपत्ति और ५००० बीघा जमीन विनोबाजी को अर्पित कर देने की घोषणा की। इससे पहले दोनों में से कोई भी एक-दूसरे से नहीं मिले थे।

आज भी ईश्वरीय प्रेरणा से बड़े-बड़े जमींदार व धनाढ्य अपनी संपत्ति गरीबों के लिए स्वेच्छा से विनोबाजी को भेंट कर रहे हैं।
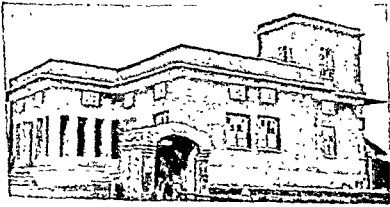
(५५) विनोबाजी का आश्रम जो उनकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहा है।

विनोबाजी ने भीषण प्रतिज्ञा की है कि जबतक भूदान-यज्ञ सफल नहीं होगा, तब तक मैं वापस आश्रम को नहीं लौटूंगा।
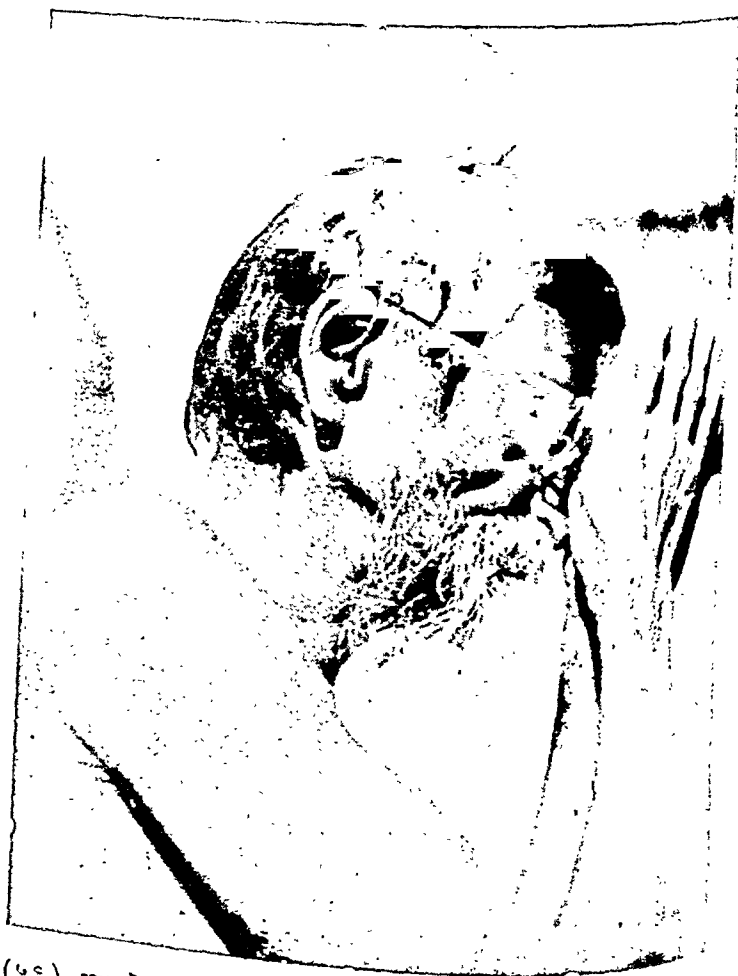
संत विनोबा

(जीवनी, प्रार्थना, दिव्य वाणी आदि अनेक बातों का संग्रह)

विषय-सूची

संत विनोबा

भारत भूमि सदा से ही ऐसे महापुरुषों की जननी रही है जिन्होंने भारत को ही नहीं अपितु समस्त विश्व को अपनी ज्ञान-ज्योति से सन्मार्ग दिखलाया है। पूज्य महात्मा गांधी उन्हीं महापुरुषों में से एक थे। स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि ब्रिटिश साम्राज्य जैसे शक्तिशाली राज्य से लोहा लेकर भारत इतनी जल्दी स्वाधीन हो सकेगा। पर गांधीजी ने असंभव को संभव करके दिखला दिया। उनका अन्तिम आदर्श तो भारत में रामराज्य स्थापित करने का था, पर दुर्भाग्य से वे समय के पहिले ही चल बसे। उनकी मृत्यु के बाद कोई ऐसा महापुरुष नहीं दिखता था, जो उस काम को पूरा कर सके। पर कुछ दिनों बाद ही उनके परम अनुयायी संत विनोबा अपने एकान्तवास से बाहर आये और जिस प्रकार सूर्य की एक किरण संसार को प्रकाशमान कर देती है, उसी प्रकार उन्होंने थोड़े ही समय में ही भारत के नगरों और गांवों में एक नवीन चेतना, एक नवीन जागृति उत्पन्न करदी। सारा भारत आज उनकी ओर आशाभरी दृष्टि से देख रहा है। भारत ही क्यों, संसार के अन्य देशों को भी उनके द्वारा उठाये गये क्रान्तिकारी क़दम में बड़ी संभावनायें दिखाई देती हैं।

आज विनोबा देश के कोने-कोने में अलख जगाते घूम रहे हैं। वे हजारों मील की यात्रा कर चुके हैं। उनकी भूमिहीनों के लिए भूमि की मांग तो एक निमित्त मात्र है। वास्तव में वे अपने इस क़दम के द्वारा अहिंसक क्रांति करने निकले हैं और उसी का घर-घर गांव-गांव, नगर-नगर शंखनाद करते हुए मुट्ठीभर साथियों के साथ घूम रहे हैं। नाम की उन्हें चाह नहीं है, प्रचार की उन्हें चिन्ता नहीं है, आलोचना की उन्हें परवाह नहीं है। चिन्ता है तो बस एक और वह

कि लोगों में, प्रेमभाव, साम्यभाव और सखाभाव पैदा हो, जिससे हमारे देश में फिरसे रामराज्य हो जाय। वे ऐसी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था क़ायम करने निकले हैं जिसकी जड़ में हिंसा की जगह अहिंसा हो, शोषण की जगह सहयोग हो और द्वेष के स्थान पर भ्रातृभाव हो। उनकी सूखी सी देह है, एक एक हड्डी चमक रही है। पर कितना आत्मिक वल है उनके दुवले पतले शरीर में! महात्मा गांधीजी का उन्होंने अपने को शिष्य माना है, पर स्वयं गांधीजी ने कई अवसरों पर कहा है कि कई वातों में विनोवा मुझ से कहीं ऊंचे हैं। ऐसे महापुरुष का जीवन-परिचय सभी लोगों के लिए वड़ा लाभदायक होगा।

विनोवाजी के पूर्वज

विनोवाजी के पूर्वज महाराष्ट्रीय व्राह्मण थे और रत्नागिरी जिले के रहने वाले थे। इसी परिवार के श्री नरसिंहराव भावे को वीरता के उपलक्ष में गागोदा नाम का गांव इनाम में मिला था।

विनोवा के दादा शंभुराव भावे इसी वंश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे। वे वड़े विरक्त, साहसी और क्रांतिकारी थे। इनके पूर्वजों ने कोटेश्वर महादेव का मंदिर वनवाया था। इसी मंदिर में वे अपना वहुत सा समय भजन और पूजन में लगाते थे। उस ज़माने में जवकि हरिजनों से लोग दूर रहते थे, वे इस मंदिर के वार्षिकोत्सव के दिन हरिजनों को अपने मन्दिर में वुलाते, उन्हें भगवान के दर्शन करा कर भोजन कराते थे। उनका कहना था कि भगवान की दृष्टि में ऊंचनीच का कोई भी भेद नहीं है, सव उसके वच्चे हैं, उसके लिए सव समान हैं, सव एक हैं और भोजन की सच्ची ज़रूरत तो इन्हीं ग़रीवों को है। जिन लोगों को खाने-पीने की कमी नहीं हैं, उनको भोजन कराने से क्या लाभ? उस जमाने में उनका यह काम वड़ा साहस का काम था। वे जिस काम को सही समझते थे, उसे कर डालते थे। जाति के वंधनों की वे पर्वाह नहीं करते थे।

जन्म और बाल्यकाल

शंभुराव के तीन पुत्र हुए, जिनमें सबसे बड़े का नाम नरहरपंत था। ये बड़े बुद्धिमान और तेजस्वी थे। ये बड़ौदा में सरकारी दफ्तर में काम करते थे। इनकी पत्नी का नाम रखुमाई था। इन्हीं की कोख से ११ सितम्बर सन् १८९५ को विनोबा का जन्म गागोदा गांव में हुआ। विनोबाजी का बाल्यकाल गागोदा में ही व्यतीत हुआ और वहीं पर सन् १९०१ में छः वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। प्रारंभ में घर पर ही उन्हें धार्मिक शिक्षा दी गई और मराठी का लिखना-पढ़ना सिखाया गया।

विद्यार्थी जीवन

९ वर्ष की अवस्था में ये अपने पिता के पास बड़ौदा में आ गये और तीसरी कक्षा में भरती हुए। शुरू से ही ये बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे। इसी कक्षा में पहले नम्बर पर पास हुए। सन् १९१४ में मैट्रिक की परीक्षा में बैठे और पास हो गये। इसके बाद कालेज में भर्ती हुए। एक वर्ष तो पूरा किया पर दूसरे वर्ष में इनका जी ऊब गया। उन्हें इस शिक्षा में कोई सार दिखाई न दिया। अतः बिना कोई डिग्री लिये सन् १९१६ में उन्होंने कालेज छोड़ दिया।

एक दिन की बात है कि जब मां रोटी बना रही थी, ये चूल्हे के पास जा बैठे और हाथ के कागजों को मोड़-मोड़ कर जलाने लगे। मां ने कहा—"विन्या यह क्या कर रहा है?" उन्होंने उत्तर दिया—"अपने मैट्रिक आदि के सार्टिफिकेट जला रहा हूँ। मैंने तय कर लिया है कि आगे नहीं पढ़ूंगा और न कोई नौकरी ही करूंगा।"

मां ने फिर कहा—"तू आगे भले ही मत पढ़ना, पर इन सार्टिफिकटों को तो रहने दिया होता। मालूम नहीं किस समय काम आ जायें।" विनोबा ने तत्काल ही उत्तर दिया "जब मैंने तय कर लिया है तो इन्हें रखकर क्या होगा? यदि ये रहेंगे तो किसी न किसी दिन

मुझे बन्धन में डाल सकते हैं। इसलिए भविष्य में आने वाले प्रलोभन का रस्सा काट देना ही ठीक है।"

विनोबाजी को दो काम बहुत पसन्द थे। दिन रात नई पुस्तकें पढ़ना और खूब पैदल घूमना। प्राकृतिक दृश्यों से उन्हें बड़ा प्रेम था। अकेले या अपने साथियों को लेकर वे घर से निकल पड़ते और पहाड़ों व जंगलों की सैर किया करते। रोजाना आठ दस मील घूमना तो उनके लिये मामूली बात थी। उनका कहना था कि १०-१२ मील शुद्ध और खुली हवा में घूम लेने से बुद्धि, मन और शरीर ताजे हो जाते हैं।

बोलने और बहस करने में भी वे बड़े तेज थे। किसी विषय पर चर्चा शुरु कर देते तो घंटों तक बिना रुके बोलते ही रहते। फक्कड़ और मस्त ऐसे थे कि कन्धे पर कुर्ता डालकर बड़ौदा जैसे शहर में निस्संकोच घूमा करते।

ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा

स्वामी रामदासजी की दासबोध पुस्तक तथा इसी तरह की अनेक धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से उनके जीवन पर बड़ा असर हुआ। उन्होंने १२ वर्ष की उमर में ही ब्रह्मचारी रहने का निश्चय कर लिया। इस निश्चय के बाद वे कठोर और संयमी जीवन बिताने लगे। वे चटाई पर नीचे सोने लगे और खाने में मिर्च-मसाले सब छोड़ दिये। एक बार माता का पत्र उनके पास आया कि एक लड़की तुम्हारे लिए तजवीज़ की जा रही है। उन्होंने तुरन्त उत्तर लिख भेजा कि यदि तुम्हें मेरी आवश्यकता है तो विवाह की चर्चा भी न करना।

धर्मपरायण माता

विनोबाजी की माता बड़ी धर्मपरायण और साधु स्वभाव की थी। प्रातःकाल उठतीं, ईश्वर-भजन करतीं और घर के कामकाज में लग जातीं। चाहे कितनी ही ठंड हो, भोजन बनाने के पहले वे अवश्य स्नान कर लेतीं। कितने ही मराठी सन्तों के भजन उन्हें कंठस्थ थे।

भोजन बनाते समय तथा अन्य काम करते समय वे इन भजनों को गुन-गुनाया करतीं। इन भजनों में कभी-कभी वे इतनी तल्लीन हो जातीं कि दाल में दुबारा नमक डाल देतीं या नमक डालना ही भूल जातीं। वे गहने प्रायः नहीं पहनती थीं और कपड़े भी बहुत कम इस्तेमाल करती थीं। वे कहती थीं कि बाहरी ठाठबाट तो उन्नति में बाधक होते हैं। सुन्दरता अच्छे-अच्छे गुणों में है और बड़प्पन अच्छे-अच्छे भलाई के काम करने से मिलता है।

वे बड़ी सेवाभावी थीं। घर में छोटा हो या बड़ा, अपना हो या पराया, सबकी समान भाव से सार-संभाल और सेवा करने में उन्हें आनन्द आता था। अतिथियों का तो वे भगवान की तरह सत्कार करती थीं। पास-पड़ौस में भी किसी को कष्ट होता तो वे उसके यहाँ जातीं और मदद करतीं। पड़ौस में कोई बीमार होता तो वे उसके यहाँ जाकर खाना बना आतीं। एक बार विनोबाजी ने विनोद में कहा "माँ तू बड़ी स्वार्थिनी है। पहले अपने घर खाना बना लेती है, तब दूसरों के घर बनाने जाती है।" माँ ने उत्तर दिया, "विन्या, तू समझता नहीं है। किसी के घर तड़के खाना बनाने जाऊं तो उसे असुविधा होगी और फिर भोजन के समय खाना भी ठंडा हो जायगा।" ऐसी उनकी धर्मबुद्धि थी। किसी की भलाई करके कभी भी उन्होंने बदले की इच्छा नहीं की। जो किया निःस्वार्थ भाव से किया।

बच्चों को वे भक्ति-भावना और सात्विक विचारों की कहानियाँ सुनाया करती थीं। विनोबा भी माँ की इन बातों को और कहानियों को बड़े ध्यान से सुनते थे। माँ की आज्ञा का बराबर पालन करते थे। कोई काम ऐसा नहीं करते थे जिससे माँ को दुःख हो। बचपन में ही घर की पाठशाला में उन्हें जो शिक्षा मिली, वह आगे चलकर उनके जीवन में बड़े काम की सिद्ध हुई। माँ की शिक्षा थी कि अधिक चीजों की इच्छा करने से सुख नहीं मिलता। सच्चा सुख तो संयम में है।

माँ की मृत्यु १४-१०-१९१८ में तथा पिता की मृत्यु ३०-१०-१९४७ में हुई

आदर्श भाई

विनोबाजी के बाद बालकृष्ण, शिवाजी, दत्तात्रेय ये तीन भाई और शांता एक बहन हुई। दत्तात्रेय की तो बचपन में ही मृत्यु हो गई थी। बालकृष्ण और शिवाजी मौजूद हैं। बालकृष्ण अपनी पढ़ाई समाप्त करके सन् १९१९ में साबरमती आश्रम में आगये और देश सेवा के काम में लग गये। गांधीजी ने इनका नाम बालकोबा रखा। अब ये उरलीकांचन (पूना) में गांधीजी द्वारा स्थापित निसर्गोपचार आश्रम चला रहे हैं। शिवाजी अपनी शिक्षा समाप्त कर सन् १९२१ में घर छोड़कर साबरमती आश्रम में आ गये थे। अब ये धूलिया में वहाँ के आश्रम का तथा गीता-तत्व मंदिर का संचालन कर रहे हैं। दोनों ही भाई विनोबाजी की तरह ब्रह्मचर्य-पूर्वक आश्रमजीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जीवन में क्रांति

जिस समय विनोबा कालेज में पढ़ रहे थे, देश में स्वाधीनता की लहर चल रही थी। इनके घर का वातावरण भी राष्ट्रीय था। उस समय सब जगह और खासकर बंगाल में क्रांतिकारी दल का जोर बढ़ रहा था। अतः विनोबाजी के मन में भी देश को आजाद कराने के लिए हलचल मच गई। उन्होंने कालेज की पढ़ाई छोड़ दी और बंगाल में क्रांतिकारी लोगों से मिलने चले गये। पर वहाँ उन्हें अच्छा नहीं लगा। इसलिए वहाँ से काशी चले आये। यहाँ उन्होंने संस्कृत और धार्मिक ग्रंथों का पढ़ना शुरू कर दिया। फलतः उनका मन आध्यात्मिकता की ओर झुक गया।

गांधीजी से सम्पर्क और आश्रम-प्रवेश

हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी के उद्घाटन-समारोह के अवसर पर गांधीजी काशी में आये और वहां उनका बड़ा ही प्रभावशाली भाषण हुआ। विनोबाजी ने भी इस भाषण को पत्रों में पढ़ा और उससे वे बड़े ही प्रभावित हुए। उन्होंने गांधीजी को पत्र लिखा और कुछ बातें पूछीं।

गांधीजी ने उन्हें बातचीत करने के लिए अपने पास बुलाया। वह अहमदाबाद गये, गांधीजी से मिले और वहां का आश्रम-जीवन देखकर बहुत ही प्रभावित हुए। इसके बाद गांधीजी की अनुमति से वे आश्रम में रहने लग गये और उनके अनन्य भक्त हो गये।

एक वर्ष की छुट्टी और पठन-पाठन

कुछ दिनों तक आश्रम में रहने के बाद उनकी इच्छा हुई कि संस्कृत का और अधिक अभ्यास करें। अतः उन्होंने गांधीजी से एक वर्ष की छुट्टी ली। छः महिने तक तो ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, गीता, पातंजलि योगदर्शन आदि आदि ग्रंथों का अभ्यास किया और शेष छः महिने महाराष्ट्र में गीता पर प्रवचन दिये। जिस दिन एक वर्ष की अवधि समाप्त हुई, ठीक उसी दिन वे आश्रम में लौट आये। विनोबा नाम गांधीजी का ही रखा हुआ है।

आश्रम-जीवन

आश्रम में विनोबाजी का जीवन बड़ा ही सयमी और कठोर था। प्रातःकाल से लेकर रात्रि को सोने के समय तक उनका सब काम बंधा था। आश्रमवालों के लिए खाना बनाते, आश्रम की सफाई करते, नदी में से पानी लाकर पेड़ों को पिलाते और कताई-बुनाई का काम करते। यह सब काम वे ईश्वर की उपासना के रूप में प्रसन्न चित्त से करते थे। कुछ समय बाद पाखाना सफाई का काम भी आश्रम में शुरू किया गया। इसमें सबसे पहले विनोबाजी तथा उनके भाई बालकोबा ने हिस्सा लिया। यह काम भी उन्होंने महिनों तक बड़ी तन्मयता से किया।

कुछ समय तक गुजरात विद्यापीठ में शिक्षक की हैसियत से भी काम किया और आश्रम के कार्यालय के व्यवस्थापक भी रहे।

वर्धा में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना

सेठ जमनालालजी बजाज को बहुत दिनों से इच्छा थी कि वर्धा में भी

एक आश्रम स्थापित किया जाय। अतएव उनके अनुरोध से गांधीजी ने आश्रम स्थापित करने के लिए विनोबाजी को वर्धा भेज दिया। आश्रम का उद्देश्य मानव समाज की आजीवन सेवा करना था। उन्होंने आश्रम वासियों के लिए अहिंसा, सत्य आदि ११ व्रत निश्चित किये। इन व्रतों का वहाँ बड़ी कड़ाई से पालन होता था।

कई वर्षों तक विनोबाजी ने महिलाश्रम का भी काम संभाला। फिर वर्धा के पास नालवाड़ी गाँव में आश्रम स्थापित किया। यहाँ उन्होंने कताई-बुनाई का खूब अभ्यास किया। कुछ समय तक तो वे नित्य प्रति आठ-आठ घंटे कताई-बुनाई का काम किया करते थे। इसके बाद पास के पोनार नामक गांव में वे चले गये और वहाँ अपना आश्रम स्थापित किया। इस तरह वर्धा या उसके पास रहकर उन्होंने पूरे तीस वर्ष तक कठोर तपस्या की।

जेल-यात्रा

सन् १९२३ में जब नागपुर में झन्डा-सत्याग्रह का आन्दोलन शुरू हुआ तो विनोबाजी ने भी उसमें प्रमुख भाग लिया और जेल गये, पर कुछ महिनों बाद ही सरकार ने समझौता कर लिया और सब लोगों को छोड़ दिया। विनोबाजी भी छूट गये। कुछ समय पश्चात् दक्षिण में व्हायकोम के मंदिरों में हरिजन-प्रवेश सत्याग्रह शुरु हुआ। गांधीजी ने वहाँ भी विनोबाजी को ही भेजा। इनके नेतृत्व में कई महीनों तक सत्याग्रह चलता रहा। अंत में इन्हें सफलता मिली और आज दक्षिण का हरेक मंदिर हरिजनों के लिए खुला है। सन् १९३० में विनोबाजी ने नमक-सत्याग्रह में भाग लिया और गिरफ़्तार किये गये। इसी तरह सन् १९३१ और ३२ के आन्दोलन में भी जेल गये। सन् १९४० में जब व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू हुआ तब गांधीजी ने विनोबाजी को पहला सत्याग्रही चुना। इस सत्याग्रह में विनोबाजी को तीन महीने की सज़ा हुई, पर छूटने के बाद ही उन्होंने फिर सत्याग्रह किया। फिर जेल भेज दिये

गये। बाद में छूटते ही फिर सत्याग्रह किया। इस तरह तीन बार जेल गये।

इसके बाद १९४२ में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू हुआ। पर विनोबाजी को सरकार ने ६ अगस्त को ही गिरफ्तार कर लिया। फिर तीन वर्ष बाद सन् १९४५ में सरकार ने विनोबाजी को छोड़ा।

पौनार में कांचन-मुक्ति का प्रयोग

१९४५ में जेल से छूटने के बाद विनोबा पौनार के अपने परंधाम आश्रम में चले गये। इस बार दूसरे कामों के साथ-साथ उन्होंने भंगी का काम भी किया। पौनार से चार मील दूर सुरगांव में रोज सुबह जाते, वहां के पाखाने व नालियां साफ करके आठ बजे वापस अपने आश्रम में आजाते। इस प्रकार जब तक गांधीजी मौजूद थे तब तक वे रचनात्मक कार्य में निरन्तर लगे रहे। गांधीजी के निधन के बाद देश में विषम स्थिति पैदा होगई। इसलिये उन्हें आश्रम से बाहर आना पड़ा। एक वर्ष तक देश में घूमे और विस्थापितों में शांति स्थापित करने के लिये प्रयत्न करते रहे। इसी दौरे में उन्हें अनुभव हुआ कि आज हमारी सारी समाज-व्यवस्था पर पैसे का प्रभुत्व छा गया है। रुपया बड़े से बड़ा अनर्थ करवा देता है, सत्य का मुंह बन्द कर देता है, इसलिये पैसे के जाल से मुक्त होने का उपाय करना चाहिए। इसके लिए उन्होंने अपने यहां प्रयोग शुरू किया। आश्रम में रहने वाले साथियों ने भी पूर्ण रूप से साथ देना स्वीकार किया। विनोबाजी अपने हाथ से आठ आठ, दस-दस घंटे कुदाली चलाते, हल जोतते। उनका कहना था कि हम अपने परिश्रम से कमाई हुई चीज ही का उपयोग करेंगे और उसी से जीवन निर्वाह करेंगे।

भूदान-यज्ञ की प्रेरणा, आरम्भ और विकास

सन् १९५१ में शिवरामपल्ली (हैदराबाद) में सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेने विनोबाजी पैदल गये। वर्धा से शिवरामपल्ली कोई ३०० मील

दूर है। विनोवाजी थोड़े से साथियों के साथ दस-दस बारह-बारह मील रोज चलकर, लोगों को सर्वोदय का संदेश सुनाते हुये एक महीने में वहाँ पहुंचे। कुछ लोगों ने आग्रह किया कि वे इतनी दूर आये हैं तो तैलंगाना की हालत भी देखते जावें, जहाँ साम्यवादियों ने हिंसक प्रवृत्तियों से त्राहि-त्राहि मचा रक्खी थी। सैकड़ों लोग घरबार छोड़-कर चले गये थे। सम्मेलन की समाप्ति पर विनोवाजी वहाँ के दौरे पर निकल पड़े।

उनका चौथा पड़ाव पोचमपल्ली नामक गांव में पड़ा। विनोवाजी गांव में घूमने निकले। वहाँ के हरिजन बहुत दुखी थे। उनके पास भूमि न थी और उन्हें दूसरों के यहाँ काम करने से जो मजदूरी मिलती थी, उससे उनका पूरा पेट भी नहीं भर पाता था। उन्होंने विनोवाजी से कहा कि अगर हमें जमीन मिल जाय तो हम लोग अपने हाथ से उस पर खेती करेंगे। विनोवाजी ने पूछा कि कितनी जमीन से काम चल जायगा। उन्होंने बताया कि अस्सी एकड़ काफ़ी होगी।

दोपहर बाद जब गांव के लोग इकट्ठे हुए तो विनोवाजी ने अस्सी एकड़ की मांग उनके सामने रक्खी। मांग रखनी थी कि श्री रामचंद्र रेड्डी नामक एक सज्जन उठकर खड़े हुए और बड़ी विनम्रता के साथ बोले, "महाराज, यह लीजिये, मैं १०० एकड़ देता हूँ।"

महज प्रेम के तकाज़े पर इतनी जमीन मिल जाना एक आश्चर्य की बात थी। विनोवाजी ने वह स्वीकार करली और यहीं से भूदान-यज्ञ की गंगा प्रवाहित हो गई। भूमि लोगों को सता कर या क़ानून के जोर पर भी ली जा सकती थी, लेकिन वह शांति का रास्ता नहीं था। इसलिये विनोवाजी ने प्रेम का रास्ता अंगीकार किया। उन्होंने निश्चय किया कि वह भारत के गांव-गांव में घूमेंगे और प्रेम से भूमि इकट्ठी करेंगे। तैलंगाना में लगभग दस हजार एकड़ भूमि मिली। तैलंगाना से लौटकर विनोवा वर्धा आये और वहाँ कुछ दिन ठहर दिल्ली के लिये पैदल रवाना हो गये। रास्ते में भूमि मांगते हुये और लेते हुये दिल्ली आये। ११ दिन

वहाँ रहे और फिर उत्तर प्रदेश की यात्रा पर निकल पड़े। शुरू में उन्होंने भूमि की ही माग की थी। बाद में उसमें हल-दान, कूप-दान, बैल-दान बुद्धिदान भी आ मिले। विनोबाजी की वाणी में किसी प्रकार का दबाव न था, झुंझलाहट न थी, था तो केवल प्रेम। वे नम्रता के साथ कहते थे कि आपके पाँच बेटे हैं तो छठा मुझे मानलो और मेरा हिस्सा मुझे दे दो। उनका कहना है कि जिस प्रकार हवा, पानी, धूप पर किसी का अधिकार नहीं है, उसी प्रकार भूमि भी किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं है। वह ईश्वर की दी हुई चीज है। जो उस पर मेहनत करे, वही उसकी कमाई खाय।

लोग प्रेम से विनोबाजी की बात सुनने और उन्हें जमीन देने लगे। कुछ लोगों ने उनकी आलोचना भी की, लेकिन विनोबाजी ने उसकी चिन्ता नहीं की और सूर्य की अखंड गति की भांति निरंतर अपने रास्ते पर आगे बढ़ते गये। उत्तर प्रदेश की यात्रा में खतौली नामक स्थान पर एक साइकिल वाले की असावधानी से उनके चोट आगई, फिर भी उनकी यात्रा रुकी नहीं। लोगों के विशेष आग्रह पर उन्होंने कुर्सी पर और बाद में बैलगाड़ी पर यात्रा करना स्वीकार कर लिया। उस समय भी वह जितना चल सकते थे, पैदल चलते रहे।

जैसे-जैसे विनोबाजी बढ़ते गये, लोगों का ध्यान उनके महान् कार्य की ओर आकर्षित होता गया। फिर तो भूदान-यज्ञ समितियां बनीं उनके संयोजक नियुक्त हुए और भूदान का कार्य चारों ओर फैलने लगा। सेवा-पुरी के सर्वोदय सम्मेलन में उसने एक आंदोलन का रूप ग्रहण कर लिया और चांडिल के सम्मेलन में तो वह देश का स्वर बन गया।

उत्तर प्रदेश में विनोबाजी लगभग एक वर्ष रहे और कई लाख एकड़ भूमि उन्हें प्राप्त हुई। उत्तर प्रदेश के भ्रमण के बाद वे कुछ समय काशी ठहरे। फिर बिहार की यात्रा पर निकल गये। आजकल वे ओड़ीसा में घूम रहे हैं। अब तक उन्हें ७० लाख एकड़ से अधिक भूमि मिल गई है। वे चाहते हैं कि सन् १९५७ तक पाँच करोड़ एकड़ भूमि के संग्रह का जो

संकल्प किया है, वह पूरा हो जाय और उस समय तक उसका वितरण भी हो जाय।

उत्तर प्रदेश में उन्होंने एक नये दान का प्रारम्भ किया और वह था श्रमदान, यानि जिनके पास धरती नहीं है वे अपने हाथ-पैर की मेहनत से धरती के तोड़ने आदि के काम में मदद करें। पटना से सम्पत्तिदान शुरू हुआ। विनोबाजी ने लोगों से कहा कि लोग अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग दें, और उनके कहे अनुसार वे स्वयं ही खर्च करें।

इस प्रकार भूदान-यज्ञ निरन्तर व्यापक होता जा रहा है। विनोबा कहते हैं कि इस यज्ञ के द्वारा मैं देश में सेवा के लिये अनुकूल वातावरण तैयार करना चाहता हूँ।

उनकी इच्छा है कि जिनके पास जमीन नहीं है, उन परिवारों को कम से कम खुश्क जमीन पाँच एकड़ तथा तर जमीन एक एकड़ अवश्य मिले। इसी निमित्त को लेकर वे प्रयत्न कर रहे हैं; पर उनका वास्तविक ध्येय तो देश की जनशक्ति को रचनात्मक कामों में लगाने का है।

विनोबाजी के इस क़दम से देश में एक नई हवा पैदा हो गई है। जिनके पास थोड़ी जमीन थी, उन्होंने भी बड़ी आत्मीयता के साथ उन्हें कुछ भाग दिया है। कहीं कहीं तो लोगों ने अपनी सारी की सारी जमीन उन्हें अर्पित करदी है। उन्हें लाख लाख एकड़ के भी दान मिले हैं और मंगरोठ के लोगों ने तो गाँव का गाँव ही इस संत के चरणों में चढ़ा दिया था। इसी तरह उड़ीसा में तीनसो से ऊपर गांव दान में मिले हैं।

'जो दे उसका भी भला, जो न दे उसका भी भला' इस सिद्धान्त के अनुसार विनोबाजी सबकी मंगल कामना करते हुए अपने ध्येय की पूर्ति में लगे हैं। उन्होंने संकल्प किया है कि जब तक भूमि की समस्या हल नहीं हो जायगी, वे इस काम को नहीं छोड़ेंगे और न अपने पौनार आश्रम को ही लौटेंगे। हम सबको चाहिए कि इस काम में उन्हें मदद दें। यह काम उनका नहीं है, देश का काम है। देश के ३५ करोड़ व्यक्तियों की भलाई का काम है।

विनोबाजी की दिनचर्या

प्राचीन भारत के ऋषि महर्षि तथा धर्मपरायण लोग ब्रह्ममुहूर्त में उठ जाया करते थे। यह समय ईश्वर-भजन, चिंतन, मनन और पठन के लिए सर्व श्रेष्ठ होता है।

विनोबाजी ठीक तीन बजे रात को उठ जाते हैं और शौचादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्वाध्याय के लिये बैठ जाते हैं। जहां घड़ी में चार बजे कि वे आगे के लिए पैदल रवाना हो जाते हैं। उनके साथी भी उसी समय तक तैय्यार हो जाते हैं।

रास्ते में चलते चलते ही प्रातःकाल की प्रार्थना होती है। प्रार्थना के बाद जिस किसी को विनोबाजी से बातचीत करनी होती है तो वे रास्ते में चलते चलते करते जाते हैं। इस वृद्धावस्था में भी विनोबाजी इतनी तेजी से चलते हैं कि कई नये साथी तो पीछे ही रह जाते हैं। प्रायः एक घंटे में उनकी तीन मील की चाल है।

रास्ते में जहाँ ६॥ बज जाते हैं वहीं पर जंगल में ही सब साथी बैठ जाते हैं और साथ में लिया हुआ नाश्ता कर लेते हैं। विनोबाजी इस समय दूध, शहद, मूंगफली, पिंडखजूर ऐसी ही चीजें लेते हैं। लगभग आध घंटे बाद फिर यात्रा शुरू हो जाती है। रोजाना औसत दर्जे लगभग नौ दस मील की यात्रा हो जाती है। कभी कभी तो पंद्रह सोलह मील तक आगे का मुकाम होता है।

पहुँचने के स्थान से मील दो मील पहले ही सैकड़ों और हजारों की संख्या में स्त्री और पुरुष उनके स्वागत के लिए आ पहुँचते हैं। विनोबाजी अपने स्थान पर पहुँचते ही हाथ पैर धोकर सभास्थान पर पहुँच जाते हैं और लोगों को अपना संदेश सुनाते हैं। इसके बाद थोड़ी देर विश्राम कर, आये हुए लोगों से बातचीत करते हैं।

इस तरह लगभग दस बज जाते हैं। इसके बाद स्नान करते हैं और आई हुई डाक तथा अखबार देखते हैं। बाद में दूध या दही या फल ऐसी

ही चीजें भोजन में लेते हैं और थोड़ा विश्राम करके आये हुए पत्रों का उत्तर लिखवाते हैं तथा लोगों से वातचीत करते हैं। इस तरह लगभग तीन वज जाते हैं।

तीन वजे गाँव के सब लोग इकट्ठा हो जाते हैं और विनोबाजी का चर्खा-यज्ञ का कार्य-क्रम शुरु हो जाता है। आध घंटे तक कातने का कार्य क्रम रहता है और फिर विनोबाजी का उपदेश शुरु हो जाता है और इसी समय भूमिदान देने वाले लोग अपना अपना दानपत्र भर कर विनोबाजी को भेट करते हैं। इस समय का दृश्य बड़ा ही भव्य होता है। फिर सायं काल के समय सामुहिक प्रार्थना होती है। इस समय भी विनोबाजी का प्रवचन होता है। इन सब कार्यक्रमों के साथ साथ विनोबाजी ने श्रमदान का भी कार्यक्रम रखा है। वे स्वयं, उनके साथी तथा और लोग जो चाहें, फावड़े कुदाली लेकर गाँव के पास की खराब जमीन को ठीक करते हैं। इस तरह सुबह से लेकर शाम तक विनोबाजी निरन्तर काम में लगे रहते हैं। प्रार्थना के वाद कुछ स्वाध्याय करते हैं या आये हुए लोगों से वातचीत करते हैं। फिर रात के ८॥ वजे मौन ले लेते हैं और ९ वजे सो जाते हैं।

इस पुस्तक के पाठकों से विनीत प्रार्थना

पूज्य विनोबाजी द्वारा निर्धारित उपासना

सायंकाल की उपासना

१

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगा
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः

अर्जुन ने कहा—

१ स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे,
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता ?

श्री भगवान ने कहा—

२ मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो,
आप में आप ही तुष्ट, सो स्थितप्रज्ञ है तभी ।

३ दु:ख में जो अनुद्विग्न सुख में नित्य निःस्पृह,
वीत-राग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही ।

४ जो शुभाशुभ को पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा ।

५ कूर्म ज्यों निज अंगों को, इन्द्रियों को समेट ले—
सर्वशः विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा ।

६ भोग तो छूट जाते हैं निराहारी मनुष्य के,
रस किन्तु नहीं जाता, जाता है आत्म-लाभ से ।

७ यत्नयुक्त सुधी को भी इन्द्रियां ये प्रमत्त जो,
मन को हर लेती हैं, अपने बल से हठात् ।

८ इन्हें संयम से रोके, मुझी में रत, युक्त हो,
इन्द्रियां जिसने जीतीं प्रज्ञा है उसकी स्थिरा ।

९ भोग-चिन्तन होने से होता उत्पन्न संग है,
संग से काम होता है, काम से क्रोध भारत।

१० क्रोध से मोह होता है, मोह से स्मृतिविभ्रम,
उससे बुद्धि का नाश, बुद्धिनाश विनाश है।

११ राग-द्वेष-परित्यागी करे इन्द्रिय-कार्य जो,
स्वाधीन वृत्ति से पार्थ, पाता आत्म-प्रसाद सो।

१२ प्रसाद-युत होने से छूटते सब दुःख हैं,
होती प्रसन्नचेता की बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।

१३ नहीं बुद्धि अयोगी के, भावना उसमें कहाँ,
अभावन कहाँ शान्त, कैसे सुख अशान्त को।

१४ मन जो दौड़ता पीछे इन्द्रियों के विहार में—
खींचता जनकी प्रज्ञा, जल में नाव वायु ज्यों।

१५ अतएव महावाहो, इन्द्रियों को समेट ले—
सर्वथा विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

१६ निशा जो सर्व भूतों की संयमी जागते वहाँ,
जागते जिसमें अन्य, वह तत्वज्ञ की निशा।

१७ नदी-नदों से भारत हुआ भी
समुद्र है ज्यों, स्थिर सुप्रतिष्ठ,
त्यों काम सारे जिसमें समावें,
पाता वही शान्ति, न काम-कामी।

१८ सर्व-काम परित्यागी विचरे नर निःस्पृह,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम शान्ति सो।

१९ ब्राह्मीस्थिति यही पार्थ, इसे पाके न मोह है,
टिकती अन्त में भी है ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी।

२

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द विनायक सविता पावक तू ।।
ब्रह्म मज्द तू, यह्व, व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू।।

३

राजा राम राम राम, सीता राम राम राम ।।
राजा राम राम राम, सीता राम राम राम ।। धुन

४

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह ।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन ।।
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना ।
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं ।।

× × ×

प्रातःकाल की उपासना

१

ॐ पूर्ण है वह पूर्ण है यह,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल,
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१ हरिः ॐ ईश का आवास यह सारा जगत्,
जीवन यहाँ जो कुछ उसीसे व्याप्त है।
अतएव करके त्याग उसके नाम से,

तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धन की, किसीके भी न रख तू वासना।

२ करते हुए ही कर्म इस संसार में,
शत वर्ष का जीवन हमारा इष्ट हो।
तुझ देहधारी के लिए पथ एक यह,
अतिरिक्त इससे दूसरा पथ है नहीं।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्म से,
उसके चिकटती मात्र फल की वासना।

३ मानी गई हैं योनियाँ जो आसुरी,
छाया हुआ जिनमें तिमिर घनघोर है।
मुड़ते उन्हीं की ओर मरकर वे मनुज,
जो आत्मघातक शत्रु आत्मज्ञान के।

४ चलता नहीं, फिरता नहीं, है एक ही,
वह आत्मतत्व सवेग मन से भी अधिक।
उसको कहीं भी देव धर पाते नहीं,
उनको कभी का वह स्वयं ही है धरे।
वह उन सभी को, दौड़ते जो जा रहे,
ठहरा हुआ भी छोड़ पीछे ही गया।
वह "है", तभी तो संचरित है प्राण यह,
जो कर रहा क्रीड़ा प्रकृति की गोद में।

५ वह चल रहा है और वह चलता नहीं,
वह दूर है फिर भी निरन्तर पास है।
भीतर सभी के बस रहा सर्वत्र ही,
बाहर सभी के है तदपि वह सर्वदा।

६ जब जो निरन्तर देखता है भूत सब,
आत्मस्थ ही हैं, और आत्मा दीखता।

सम्पूर्ण भूतों में जिसे, तब वह पुरुष,
ऊबा किसी के प्रति नहीं रहता कहीं।

७ ये सर्वभूत हुए जिसे हैं आत्ममय,
एकत्व का दर्शन निरन्तर जो करे,
तब उस दशा में उस सुधीजन के लिए,
कैसा कहाँ क्या मोह, कैसा शोक क्या ?

८ सब ओर आत्मा घेर कर आत्मज्ञ सो
है बैठ जाता, प्राप्त कर लेता उसे—
जो तेज से परिपूर्ण है, अशरीर है,
यों मुक्त है तनु के व्रणादिक दोष से,
त्यों स्नायु आदिक देहगुण से भी रहित—
जो शुद्ध है, बेंधा नहीं अघ ने जिसे।
वह क्रान्तदर्शी, कवि, वशी, व्यापक, स्वतंत्र,
सब अर्थ उसके सध गये हैं ठीक से,
सुस्थिर रहेंगे जो चिरन्तन काल से।

९ जो जन अविद्या में निरन्तर मग्न हैं,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में।
जो मनुज विद्या में सदा रममाण हैं,
वे और घन तमसान्ध में मानों धँसे।

१० वह आत्मतत्त्व विभिन्न विद्या से कथित,
एवं अविद्या से कथित है भिन्न वह।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना,
जिनसे हुआ उस तत्त्व का दर्शन हमें।

११ विद्या, अविद्या—इन उभय के साथ में
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को,

इसके सहारे तर अविद्या से मरण
वे प्राप्त विद्या से अमृत करते सदा ।

१२ जो मनुज करते हैं निरोध-उपासना
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में ।
जो जन सदैव विकास में रममाण हैं,
वे और घन तमसान्ध में मानो धँसे ।

१३ वह आत्मतत्त्व विकास से है भिन्न ही,
कहते उसे एवं विभिन्न निरोध से ।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना,
जिनसे हुआ उस तत्त्व का दर्शन हमें ।

१४ ये जो विकास-निरोध,—इन दो के सहित,
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को ।
इसके सहारे मरण पैर निरोध से,
पाते सदैव विकास के द्वारा अमृत ।

१५ मुख आवरित है सत्य का उस पात्र से,
जो हेममय है विश्व-पोषक हे प्रभो ।
तुझ सत्यधर्मा के लिए वह आवरण,
तू दूर कर, जिससे कि दर्शन कर सकूँ ।

१६ तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक एक है
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर रहा,
पालन सभी का हो रहा तुझसे प्रजा की भांति है ।
निज पोषणादिक रश्मियाँ तू खोलकर मुझको दिखा,
फिर से दिखा एकत्र त्यों ही जोड़ करके तू उन्हें ।
अब देखता हूं रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम,
वह जो परात्पर पुरुष है, मैं हूं वही ।

१७ यह प्राण उस चेतन अमृतमय तत्त्व में
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो ।

१८ से नाम ईश्वर का अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, उसका किया तू स्मरण कर।
संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह उसे।

१८ हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे सत्य जो जग में प्रथित।
ले जा परम आनन्दमय की ओर तू
ऋजु मार्ग से, हमको कुटिल अघ से बचा।
फिर फिर विनय मत नम्र वचनों से तुझे

१ ॐ पूर्ण है यह पूर्ण है यह,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल,
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

२ ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द विनायक सविता पावक तू॥
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू॥
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू॥

३ नारायण नारायण जय गोविन्द हरे।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥ धुन

४ अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्व धर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं॥

भूदान-यज्ञ की प्रेरक घटनाएँ

भूदान-यज्ञ की यात्रा में कभी-कभी ऐसी हृदयस्पर्शी घटनाएँ सामने आती हैं, जिनकी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सकती थी। यहां हम कुछ ऐसी ही घटनाएँ दे रहे हैं।

(१) विलक्षण हृदय-परिवर्तन

तेलंगाना के तंगडपल्ली नामक गाँव की वात है। वहां दो सगे भाई आपस में लड़ रहे थे और अदालत में हजारों रुपये बरवाद कर चुके थे। उन्हें लेकर गाँव में दो पक्ष बन गये थे। विनोबाजी वहाँ पहुंचे तो गांव-वालों ने उनसे कहा कि इन दोनों की लड़ाई के कारण सारा गाँव तवाह हो रहा है। विनोवाजी ने दोनों भाइयों की बातें सुनीं और प्रेम पूर्वक समझाया और पूछा "तुम दोनों कितने बरस और जीनेवाले हो"

"हमारा एक पाँव स्मशान में है और एक यहाँ है" एक ने जवाब दिया। दूसरे भाई ने भी इसका समर्थन किया।

विनोवाजी ने कहा "फिर यह लड़ाई और यह तबाही किस लिए है।" दोनों ने उत्तर दिया कि आप आज्ञा देंगे वह हमें स्वीकार है। विनोवाजी ने शाम की प्रार्थना के समय दोनों भाइयों को मंच पर वुलाया और उपस्थित लोगों को संवोधन करके कहा "ये दोनों भाई अव तक कौरव-पांडव थे। आज से इनके झगड़े मिट गये।"

दोनों भाइयों ने विनोबाजी को प्रणाम किया और मंच पर ही एक दूसरे से ऐसे गले मिले मानों वर्षों से बिछुड़े हुए मिले हों। अनन्तर उन्होंने नब्बे एकड़ जमीन का दान देकर गाँव की सेवा करने तथा राम लक्ष्मण की जोड़ी की तरह परस्पर प्रेम से रहने का वचन दिया। इससे उन दोनों भाइयों को तो हर्ष हुआ ही, सारा गाँव भी आनन्दित हो उठा।

(२) भगवान् कृष्ण का दान

विनोबाजी का पड़ाव चौदहपुर गाँव में था। दिन भर अत्यन्त व्यस्त

रह कर रात को विनोबाजी सो गये। उनके साथी भी सो गये। करीब ११ बजे होंगे, बैलों के गले में बंधे हुए घुघरों की जोरों से आवाज आने लगी। उस आवाज से एक साथी जागे और बाहर आकर देखा तो मालूम हुआ कि एक बैलगाड़ी खड़ी है जिसमें हाँकने वाले के अलावा एक बूढ़ा आदमी और बैठा हुआ है।

विनोबाजी के साथी ने पूछा "आपका क्या नाम है और इतनी रात को कैसे आये हैं?"

गाड़ी में बैठे हुए भाई ने कहा, "मेरा नाम रामचरण है, मैं आँखों से अन्धा हूँ। बहुत दूर से आ रहा हूँ। मैंने सुना था कि संत विनोबाजी जमीन का दान लेते हैं और गरीबों को बाँटते हैं। इसलिये ऐसे सत को जमीन भेट करने की मेरी भी इच्छा हुई क्योंकि ऐसे मोके जीवन में बार बार नहीं आते। मैं पहुंच तो जल्दी ही जाता पर कारणवश देर हो गई। अब संत सोये हुये हैं, उन्हें उठाना ठीक नहीं और मुझे वापस सुबह अपने स्थान पर पहुँचना है। मेरे पास १२ बीघा जमीन है, वह मैं सब की सब देने आया हूँ। उसी समय रात को ही भूमिदान-पत्र भरा गया और उन्होंने उस पर अपना अंगूठा लगा दिया।

अगले दिन विनोबाजी ने जब अपने प्रवचन में इस घटना का उल्लेख किया तो उनकी वाणी रुक गई और आँखों से आँसू बह निकले। बड़ी कठिनाई से मुंह खुला, तो बोले, "वह व्यक्ति और कोई नहीं रामचरण के रूप में कृष्ण भगवान ही थे जो गुप्त दान देकर चले गये।"

हमारे भारतीय संस्कृति में दान की बड़ी महिमा है, पवित्रता है। लेकिन ऐसे अद्भुत दान की पावनता शायद ही कहीं ढूंढ़े मिले।

(३) अब दो हो गये

दिल्ली की बात है। विनोबाजी राजघाट पर कुटिया में ठहरे हुए थे। एक दिन रात को एक वयोवृद्ध सज्जन रजाई ओढ़े आये और बोले, मेरे पास पैंसठ एकड़ भूमि है। दस एकड़ निकम्मी है, बाकी अच्छी।

विनोबाजी ने पूछा "तुम्हारे कितने लड़के हैं?" उत्तर मिला "एक" तो "अब दो हो गये। दूसरे को उसका हक दे दो" विनोबाजी ने कहा।

"सारी जमीन आपके समर्पण है, जितनी चाहें, लेलें" "अच्छा साढ़े सत्ताईस एकड़ दे जाओ" विनोबाजी ने कहा। वह खुशी खुशी देकर चले गये।

(४) विनोबा बाबा फ़कीर हैं

इन पंक्तियों का लेखक विनोबाजी से मिलने के लिए दादरी (उत्तर प्रदेश) जा रहा था। दिल्ली स्टेशन से बस में बैठा तो ड्राइवर से यों ही पूछ लिया "विनोबाजी दादरी पहुँच गये क्या?"

"जी हाँ, सवेरे ही पहुँच गये" उसने उत्तर दिया।

"क्योंजी, जो कुछ वे कर रहे हैं उस बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?"

ड्राइवर मुस्करा उठा! बोला, "वे तो फ़कीर हैं। जो करें सो ठीक।"

"फ़कीर! जो आदमी इतनी जमीन इकट्ठी कर रहा है, उसके लिये इतनी दौड़धूप कर रहा है, वह फ़कीर कैसा! फ़कीर का काम तो कहीं एक जगह बैठ कर रामनाम जपना है।"

ड्राइवर हँस पड़ा। बोला, "यह आपने खूब कही। विनोबा बाबा तो फ़कीर हैं, महात्मा हैं। कितनी मुसीबत उठाकर जमीन इकट्ठी कर रहे हैं। किसके लिये? अपने लिए नहीं, ग़रीबों के लिए। जमीन का एक जर्रा भी वे अपने लिये नहीं रक्खेंगे, गांधी बाबा दूसरों के लिये जिए, ये भी वैसा ही कर रहे हैं।"

(५) कुए का दान

गाजियाबाद की बात है। विनोबाजी वहां की एक पाठशाला में ठहरे हुए थे। दोपहर के समय एक स्थानीय सज्जन सपरिवार उनसे मिलने आये। वहां के बड़े व्यापारी थे। सौ-सौ रुपये के कुछ नोट ...ी के सामने बढ़ाते हुए बोले, "ये आपकी भेंट हैं।"

विनोबाजी ने उनके चेहरे की तरफ देखा, फिर बोले, "मैं रुपये नहीं लेता। उसी का तो मुझे उच्छेद करना है। आप जमीन दीजिए।"

वे बोले, "जमीन तो हमारे पास नहीं है।"

"तो खरीद कर देवें, उतना न हो तो कुंआ खुदवा दें, बैल खरीद दें।"

"अच्छी बात है आप जहां कहेंगे, एक पक्का कुंआ बनवा दूंगा।" कृतज्ञ-भाव से उस भाई ने कहा और दानपत्र भर कर विनोबाजी को प्रणाम करके चले गये।

(६) वृद्धा की भेंट

ठंड का मौसम था ! नैनीताल जिले के एक गांव में विनोबाजी का पड़ाव था। विनोबाजी के मन्त्री दामोदरदासजी नियमानुसार सुबह तीन बजे उठे और कैम्प से बाहर निकले तो क्या देखते हैं कि एक बूढ़ी माता सामने चबूतरे पर बैठी हुई है।

उन्होंने पूछा "माजी, आप कहां से आये हो।"

बेटा, यहां से छै मील दूर कालाढूगी गांव से आई हूँ।"

"इतनी दूर से और ऐसी सरदी में इतने सवेरे कैसे आये"

वो बोली "आ तो मैं कल रात को ही गई थी लेकिन रात ज्यादा होगई थी, आप सब सो गये थे इसलिये नहीं जगाया।"

वे बोले "आप सारी रात ऐसी ठंड में बैठी रहीं, अब मैं आपकी क्या सेवा करूं सो बतायें।" बूढ़ी मां बोली "मेरे पास थोड़ी जमीन है, उसे मैं संतजी की सेवा में भेंट करने आई हूँ। कागज लाओ सो मैं उस पर अंगूठा करदूं। फिर मुझे वापस जल्दी ही घर पहुँचना है।"

विनोबाजी ने दूसरे दिन प्रार्थना-सभा में कहा कि इस यज्ञ में कितनी ही शबरियों ने बेर भेंट किये हैं, यह अहिंसात्मक क्रांति का साक्षात्कार है। बूढ़ी मां रात भर ठंड में बैठी रहीं, किसी से कुछ लेने के लिये नहीं परन्तु अपनी प्यारी सम्पत्ति का दान देने के लिये।

(७) शुभ संकल्प और सत्कार्य का प्रभाव

एक गाँव में विनोबाजी ठहरे हुए थे। उनका सारा दिन वहाँ व्यतीत हुआ और अन्य स्थानों की तरह वहाँ शाम को प्रार्थना और उसके बाद प्रवचन भी हुआ। वहाँ से दिन भर में केवल चार एकड़ भूमि मिली। प्रवचन समाप्त करके विनोबाजी अपने स्थान पर गये और उपनिषद् का अध्ययन करने लगे। मुश्किल से दस मिनट हुए होंगे कि एक भाई आये जो प्रार्थना में शामिल भी नहीं हुये थे और न उन्होंने प्रवचन ही सुना था। वह आठ मील दूरी से आये थे और आकर विनोबाजी के पास बैठ गये। वे बोले "ज़मीन देने आया हूँ और अपनी छः एकड़ भूमि दे गये। थोड़ी देर के बाद ही दूसरे भाई आये। वे और भी दूर से चलकर आये थे। उन्होंने ५२ एकड़ भूमि दी।

शुभ संकल्प और सत्कार्य का प्रभाव किस प्रकार अदृश्य और व्यापक रूप में पड़ता है, उक्त घटना उसका एक उदाहरण है।

(८) दान किस लिए ?

देहरादून की बात है। दूर गाँव से एक किसान विनोबाजी के पास आया और जमीन देने की इच्छा प्रकट की। विनोबाजी के पूछने पर मालूम हुआ कि वह बहुत ही मामूली हैसियत का है और जैसे-तैसे अपनी गुजर करता है। उसने चार बीघा जमीन का दान-पत्र भरकर दिया। विनोबाजी ने पूछा कि भाई इतनी जमीन क्यों दे रहे हो? वह बोला, "आज चारों तरफ़ लोगों को लेने-लेने की ही पड़ी है। अदालत में रिश्वत थाने में रिश्वत, बाजार में ठगी, जहाँ देखो वहीं धोखा देने की बात हो रही है। आज आप ही एक ऐसे मिले हैं जो ग़रीबों को देने की बात कहते हैं और लेने से देना ज्यादा जरूरी बताते हैं।"

उसकी बातें सुनकर सारी पार्टी आनन्द-विभोर हो उठी और विनोबाजी ने उस श्रद्धावान किसान के उस अल्प, पर महान दान को स्वीकार कर लिया।

(९) आड़े समय का त्याग

रामपुर की बात है। एक मामूली-सा आदमी विनोबाजी के पास आया।

"आप क्या करते हैं?" विनोबाजी ने पूछा।

उसने उत्तर दिया—"मैं दुकान करता हूँ। मेरे पास थोड़ी सी ज़मीन है। उसमें से कुछ हिस्सा आपको देना चाहता हूँ।"

आगे प्रश्न पूछने पर मालूम हुआ कि थोड़े दिन पहले ही उसका मकान जल गया था और अभी उसको अपनी पाँच लड़कियों की शादी भी करनी है। अन्त में वह बोला, "लेकिन मुझसे भी बुरी हालत में बहुत से लोग रहते हैं, उनके लिये मैं अपनी ज़मीन में से १६ बीघा १० बिस्वा ज़मीन देने के लिये आया हूँ।"

हममें से अधिकांश व्यक्ति अपना ही लाभ और अपना ही स्वार्थ देखते हैं, विशेषकर जब स्वयं हमारी आवश्यकताएँ हमारे साधनों से अधिक होती हैं तो हमारी निगाह अपने स्वार्थ की सीमित परिधि से बाहर कदापि नहीं जाती, लेकिन ऐसे आड़े समय में किये हुए त्याग और दिये हुए दान की बराबरी कौन कर सकता है!

(१०) समस्त भूमि का दान

गाज़ियाबाद की घटना है। एक बहिन विनोबाजी के पैर छूकर बैठ गई और बोली "मेरे पास साढ़े ग्यारह एकड़ ज़मीन है, वह आप ले लीजिए।"

विनोबाजी ने पूछा, "तुम्हारे पति क्या करते हैं?"

"वकील हैं। उनकी कमाई से हमारी गुज़र अच्छी तरह से हो जाती है।"

"उनको क्यों नहीं लाई?" विनोबाजी ने पूछा।

सारी-की-सारी ज़मीन का दान! विनोबाजी ने गम्भीर होकर उस बहिन की ओर देखा। बहन बोली "जब वकालत की कमाई से ही

हमारा गुजर हो जाता है तो अधिक संग्रह करने से क्या लाभ है? शास्त्रों में दान की बड़ी महिमा लिखी है। आप जैसे संतों के दर्शन बड़े पुण्य से होते हैं। अतः यह मेरी तुच्छ भेंट स्वीकार करें।" अन्त में विनोवाजी ने उसका दान-पत्र स्वीकार कर लिया।

सैकड़ों हजारों एकड़ भूमि में से कुछ एकड़ का दान दे देना आसान है लेकिन अपनी समस्त भूमि की ममता छोड़ देना आसान नहीं है। विनोवाजी को अपनी यात्रा में ऐसे दान एक दो नहीं, सैंकड़ों मिले हैं।

(११) अनुष्ठान की व्यापकता

उस घटना के वाद ही एक भाई दस गुण्डी सूत और एक सूत की माला लेकर आए। उन्होंने सूत की गुण्डियाँ विनोवाजी के सामने रख दीं और माला विनोवाजी को पहना दी। पैर छुए और जव वह पास में ही बैठे तो उनकी आंखें डवडवा रही थीं। वोले, "एक प्रार्थना है। मैं अहमदनगर से पैदल आ रहा हूँ। आप वहाँ पधारें।"

विनोवाजी की सारी पार्टी ने स्तब्धभाव से उनकी ओर देखा।

"भूमि दोगे?" विनोवाजी ने पूछा,

"वहाँ आपको इतनी जमीन मिलेगी कि आप संभाल नहीं पायेंगे। इसीलिये मैं आपको निमंत्रण देने आया हूँ।"

विनोवाजी ने गद्गद् होकर कहा, "भगवान ने चाहा तो उधर आने का प्रयत्न करूँगा।" फिर पूछा, "आप कैसे जायेंगे।"

वह वोले "पैदल ही जाऊँगा।" एक निष्ठावान व्यक्ति की दृढ़ता और उसके ध्येय की पावनता कितनों को और कहां से खींच कर ले आती हैं, इसका कौन अनुमान कर सकता है।

(१२) श्रम-दान

खतौली में विनोवाजी का पड़ाव वहां के कालेज में था। सायंकालीन प्रार्थना के पहले कालेज के कुछ छात्र और अध्यापक विनोवाजी के पास आए। उन्होंने कहा, "हमारे पास भूमि नहीं है; पर आप जो महान कार्य

कर रहे हैं, उसमें हम आपकी सेवा करना चाहते हैं। बताइए, कैसे करें?"

विनोबाजी ने कहा "आपके पास जमीन नहीं है तो मेरे विचारों को फैलाने में मदद कीजिए।" कह कर विनोबाजी थोड़े रुके जैसे उन्हें कोई नई बात सूझ गई हो, फिर बोले, "आप लोग श्रमदान भी कर सकते हैं।"

सब लोग आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। आखिर यह श्रमदान क्या चीज है? विनोबाजी ने अपनी बात साफ करते हुए कहा, जो जमीन मिलती है, उसको जोतना बोना होता है न? आप लोग अपने शरीर से मेहनत करके जोतने-बोने में योग दे सकते हैं।"

एक नये दान का प्रारम्भ हुआ। विद्यार्थियों और अध्यापकों ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक तीन घंटे का श्रमदान समर्पित किया।

(१३) गांव-का-गांव समर्पित

हमीरपुर जिले के मांगरोठ नामक गांव में एक ऐसी घटना हुई, जिसके आगे अन्य घटनाएँ फीकी पड़ जाती हैं। सन् ४२ के आन्दोलन में भी इस गांव ने बड़ा हिस्सा लिया था। इस गांव में १०४ कुटुम्बों की बस्ती है जिसमें ५० कुटुम्ब तो जमीन वाले थे और ५४ कुटुम्ब बिना जमीन वाले। सब लोग विनोबाजी का भाषण सुनने इकट्ठे हुए। विनोबाजी ने छोटा सा भाषण दिया और 'सबै भूमि गोपाल की' यह संदेश लोगों को सुनाया। इस भाषण का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जो ५० कुटुम्ब जमीन वाले थे, उन्होंने अपनी सब जमीनें विनोबाजी को समर्पण कर दीं और प्रार्थना की कि सब जमीन सब में बाँट दें। इस प्रकार इस गांव के १०४ कुटुम्ब सब जमीन वाले हो गये। सामूहिक दान का यह प्रथम और अपूर्व दृष्टान्त था। इस तरह इस गांव के सब लोग एक कुटुम्बवत् हो गये।

(१४) नौ वर्ष के बालक का अपूर्व भूमिदान

पंडित जवाहरलाल नेहरू के ६३ वें जन्मदिन के अवसर पर एक नौ

वर्ष के बालक ने अपने पिता से कहा "आज के शुभ दिन पर कोई बड़े पुण्य का काम अपने को करना चाहिये।"

पिता भी धरमात्मा था, बोला, "बेटा तुम कहो जैसा करें।"

बालक बोला "अपने गाँव में विनोबा जैसे संत आये हैं, चलिये, उनको भूमि दान देवें" पिता भी इस विचार से सहमत हो गये और नेहरूजी की ६३ वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष में ६३ एकड़ भूमि विनोबाजी को समर्पण करदी।

(१५) दो बीघा ज़मीन, दो लाख के समान

बरहज जाते हुए विनोबाजी अपने सहयात्री श्री हरीशभाई के गाँव पाँच मिनट के लिए रुके। हरीश की माताजी गाँव की अन्य स्त्रियों के साथ मंगल गीत गाती हुई आगे आई और विनोबाजी को प्रणाम किया। विनोबाजी के दर्शन कर वे इतनी आनन्दित हुई कि कुछ बोलना चाहती थीं पर बोल नहीं पा रही थीं। अन्त में वे बोलीं "हमारे पास बारह बीघा कुल जमीन है। घर में पाँच आदमी हैं। आप छठे हुए, आप के हिस्से का दो बीघा स्वीकार करें।"

शाम को विनोबाजी ने प्रार्थना-प्रवचन में कहा "माताजी का दो बीघे का दान दो लाख के समान है। माताजी का मेरे लिए यह आशीर्वाद है।"

(१६) तपस्वी भारत की आत्मा ग़रीबों में झलक रही है

विनोबाजी के सामान की गाड़ी के साथ एक हरिजन भाई रास्ता दिखाने के लिए साथ में चल रहे थे। उनके हृदय में भी दान देने की भावना जागृत हुई। वह विनोबाजी से बोला "हम घर में बारह आदमी हैं, पाँच बीघा जमीन है। जमीन की आमदनी के अलावा मेहनत मजदूरी करके पेट भर लेते हैं। अब इसमें से एक बीघा जमीन भेंट करता हूँ" विनोबाजी ने बहुत समझाया पर वह नहीं माना। अन्त में उसके संतोष के लिए कुछ डेसीमल जमीन विनोबाजी ने स्वीकार की।

ये त्याग के प्रत्यक्ष उदाहरण प्राचीन तपस्वी भारत की याद दिलाते हैं।

संत विनोवाजी की दिव्य वाणी

ईश्वर और हम दोनों एक ही चैतन्य के रूप हैं। हम अंश मात्र हैं, ईश्वर उस चैतन्य का पूर्ण रूप है। तो भी चैतन्य तो एक ही है। अतः जो उसकी शक्ति है, वही हमारी है। इसलिए ईश्वर से शक्ति मांगने व प्राप्त करने में पराधीनता नहीं है।

× × × ×

परीक्षा पास होने के लिए ईश्वर से सहायता माँगना कौनसी आस्तिकता है? यह तो कमअकली है, पुरुषार्थ-हीनता है। खेत में फसल नहीं आई—करो ईश्वर से प्रार्थना, माँगो ईश्वर से मदद। मानो इन सब प्रश्नों को हल करने की शक्ति हमें ईश्वर ने दी ही नहीं। ये ईश्वर की सहायता के विषय नहीं हैं। सकाम भावना से बाह्य कार्यों में ईश्वर की मदद माँगना हमें शोभा नहीं देता है।

× × × ×

चाकू से पेंसिल छीलना चाकू इस्तेमाल करना है। अंगुली पर चला कर हाथ ही छील लेना चाकू के आधीन हो जाना है। इन्द्रियों का उपयोग भगवान की सेवा में करना चाकू से पेंसिल छीलने जैसा है, परन्तु उनके वश में होकर बुद्धिनाश कर लेना चाकू से अंगुली काट लेना है।

× × × ×

माँ अपने बच्चे को प्रेम से सजाती है, गहने-कपड़े पहनाती है, अतः वह उसको सुन्दर दिखाई देता है। इसी तरह आत्मभावना से दिल को सजाओ, चमकाओ, मण्डित करो, आच्छादित करो और फिर देखो। आत्मीयता के कारण वह सुन्दर और प्रिय दिखाई देगा।

× × × ×

"जो आज तक नहीं हुआ, वह आगे भी नहीं होने का" यह बूढ़ा तर्क है। मालूम नहीं, इन बूढ़ों को यह क्यों नहीं समझ पड़ता कि जो आज तक नहीं हुई, ऐसी बहुतसी बातें आगे होने वाली हैं।

× × × ×

त्याग से पाप का मूल धन चुकता है, दान से उसका ब्याज। त्याग का स्वभाव दयालु है, दान का ममतामय। धर्म दोनों ही पूर्ण हैं। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान उसकी तलहटी में।

× × × ×

त्याग की प्रतीति त्याग को मार डालती है। त्याग करके हम किसी पर अहसान नहीं करते।

× × × ×

गीता ज़बानी जमाखर्च का शास्त्र नहीं है, किन्तु आचरण का शास्त्र है। गीता के प्रचार का अर्थ है, निष्काम-कर्म का प्रचार। गीता के प्रचार का अर्थ है, त्याग का प्रचार। गीता के प्रचार के मानी है, शक्ति का प्रचार। यह प्रचार पहले अपनी आत्मा में होना चाहिए। जिस दिन उससे आत्मा परिपूर्ण होकर बहने लगेगी उस दिन वह दुनिया में फैले बिना न रहेगी।

× × × ×

बम या युद्ध टालने का वास्तविक इलाज तो यही है कि हम अपनी आवश्यकता की चीजें अपने आसपास तैयार कराएं और उनके उचित दाम दें।

× × × ×

शरीरश्रम को दुःख क्यों मान लिया है, यह मेरी समझ में नहीं आता। आनन्द और सुख का जो साधन है उसी को कष्ट माना जाता है।

× × × ×

एक आदमी ने मुझसे कहा—गांधीजी ने पीसना, कातना, जूते बनाना वगैरा काम खुद करके परिश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। मैंने कहा—"मैं ऐसा नहीं मानता। परिश्रम की प्रतिष्ठा किसी महात्मा ने नहीं बढ़ाई। परिश्रम की निज की प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी।" आज भारत में गोपाल कृष्ण (भगवान कृष्ण) की जो इतनी प्रतिष्ठा है वह उनके गोपालन ने उन्हें दी है। उद्योग हमारा गुरुदेव है।

× × × ×

हमें अन्दर से भक्ति का पानी मिले और बाहर से तपस्या की धूप मिले तो हम भी पेड़ों जैसे हरे-भरे होजाएं। हम ज्ञान की दृष्टि से परिश्रम को नहीं देखते, इसलिये उसमें तकलीफ़ मालूम होती है। ऐसे लोगों के लिए भगवान का यह शाप है कि उनको आरोग्य और ज्ञान कभी मिलने वाला ही नहीं है।

× × × ×

माता की सेवा करनेवाला लड़का दुनिया भर की सेवा करता है—यह मेरी धारणा है।

× × × ×

सेवा के लिये हम विशाल क्षेत्र चाहते हैं, पर अगर असली सेवा करनी है, सेवामय बन जाना है, अपने को सेवा में खपा देना है, तो किसी देहात में चले जाइये।

× × × ×

वादविवाद में पड़ना हमारा काम नहीं। हम तो सेवा करते-करते ही खत्म हो जायं। हमारे प्रचार-कार्य का सेवा ही विशेष साधन है। दूसरों के दोष बताने और अपने विचार सामने रखने का मोह हमें छोड़ देना चाहिये। माँ अपने बच्चे के दोष थोड़े ही बताती है, वह तो उसके ऊपर प्रेम की वर्षा करती है। उसके बाद फिर कहीं दोष बताती है। असर ऐसी ही प्रेममयी सेवा का होता है।

× × × ×

आत्म-परीक्षण से मन का, मौन से वाणी का, और कर्मयोग से शरीर का दोष झड़े बिना आत्मा को आरोग्य नहीं मिलेगा।

× × × ×

ब्राह्मण का अर्थ है त्याग और साहस की साक्षात् प्रतिमा। मृत्यु के परले पार की खोज लेने के निमित्त जीवन की आहुति देने वाला ब्राह्मण।

× × × ×

जब तक तकलीफ सहने की तैयारी नहीं होती तब तक फ़ायदा दिखने का नहीं। फायदे की इमारत तकलीफ़ की नींव पर बनती है।

× × × ×

ऊंचा आदर्श सामने रखना और उसके लिये संयमी-जीवन व्यतीत करना इसको मैं ब्रह्मचर्य कहता हूँ।

× × × ×

आत्म-शक्ति का अनुभव हमें नहीं होता, क्योंकि कोई न कोई संकल्प करके उसे पूरा करने की आदत हम नहीं डालते। छोटे छोटे ही संकल्प या निश्चय कीजिये और उन्हें कार्यान्वित कीजिये तव आत्मशक्ति का अनुभव होने लगेगा।

× × × ×

निन्दा करने से किसी को भी फ़ायदा नहीं होता। जो निन्दा करता है, उसका मुंह खराब होता है और जिसकी निन्दा की जाती है, उसकी कोई उन्नति नहीं होती।

× × × ×

सच्चे हिन्दू में मुसलमान है और सच्चे मुसलमान में हिन्दू है। हम में पहचानने भर की शक्ति होनी चाहिए।

× × × ×

धर्माचरण एक उपासना है। उपासना में विरोध की गुंजाइश नहीं। जैसे 'राम' और 'विट्ठल' एक ही परमेश्वर की मूर्तियाँ हैं और इसलिए उनमें विशिष्ठता होते हुए भी उनका विरोध नहीं है। वैसे ही हिन्दू धर्म मुस्लिम धर्म इत्यादि एक ही सत्यधर्म की मूर्तियाँ हैं, इसलिए उनमें विशिष्ठता होते हुए भी विरोध नहीं है। जो ऐसा देखता है वही वास्तव में देखता है।

× × × ×

धर्म का रहस्य जानने के लिये न तो क़ुरान पढ़ने की जरूरत है, न पुरान पढ़ने की। 'सारे धर्म भगवान के चरण हैं', इतनी एक वात जान लेना वस है।

× × ×

जिस देश से उद्योग गया, उस देश को भारी घुन लगा समझना चाहिये। जो खाता है उसे उद्योग तो करना ही चाहिये फिर वह उद्योग चाहे जिस

तरह का हो।....जिस घर में उद्योग की तालीम नहीं उस घर के लड़के जल्दी ही उस घर का नाश कर देंगे।

× × × ×

शिक्षण का कार्य कोई स्वतन्त्र तत्व उत्पन्न करना नहीं है किन्तु सुप्त तत्व को जाग्रत करना है।

× × × ×

विद्यार्थियों का शिक्षण इस प्रकार होना चाहिये कि उन्हें उसका बोध ही न हो, यानि स्वाभाविक रूप से होना चाहिये।

× × × ×

विद्यार्थी के भीतर तर्कशक्ति स्वाभावतः होती है। शिक्षण का कार्य केवल ऐसे अवसर पर उपस्थित करना है जिससे उस तर्कशक्ति को समय समय पर खाद्य मिलता रहे। सारे शास्त्र, सब कलाएँ, तमाम सद्गुण मनुष्य में बीजतः स्वयंभू हैं। हम उस बीज को देख नहीं सकते। लेकिन वह दिखाई नहीं देता इसलिये उसका अभाव तो नहीं है?

× × × ×

मोक्ष ब्रह्मचारी है और काम व्यभिचारी है। इस प्रकार के ये दो सिरे हैं। धर्म कहेगा—"हमारा आदर्श ब्रह्मचर्य होना चाहिये, इसमें सन्देह नहीं। इस आदर्श के पालन का जोरों से यत्न करना चाहिये। जब काम बहुत ही भूकने लगे, तब धार्मिक विधि के अनुसार गृहस्थवृत्ति स्वीकार करके उसके आगे एकाध टुकड़ा डाल देना चाहिये। परन्तु वहाँ भी उद्देश्य तो संयम-पालन का होना चाहिये और फिर तैयारी होते ही श्रेष्ठ आश्रम में प्रवेश करके उससे छुटकारा पाना चाहिये।

× × × ×

ब्रह्मचर्य से संसार उत्सन्न (समाप्त) होगा—यह पाप के समर्थन में दी जाने वाली लचर दलील है। संसार के उत्सन्न होने की फिक्र आप न करें। उसके लिये भगवान पर्याप्त हैं। ब्रह्मचर्य से सृष्टि नष्ट नहीं होगी बल्कि मुक्ति होगी।

× × × ×

द्वेष बुद्धि को हम द्वेष से नहीं मिटा सकते। प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है।

× × × ×

चंद्र के साथ चन्द्र का वातावरण रहता है, मंगल के साथ मंगल का। वैसे ही मेरे साथ मेरा वातावरण रहना चाहिये। लोग कहते हैं—"यह तो कलियुग आया है"। काहे का कलियुग है? कलियुग में रहना है या सतयुग में, यह तो तू खुद चुनले। तेरा युग तेरे पास है।

× × × ×

हम यह न मानें कि दुनियाँ की हवा युद्ध की है, उसके सामने हम लाचार हैं। लाचार तो जड़ होती है। हम तो चेतन हैं, आत्मस्वरूप हैं, अपना वातावरण हम बना लेंगे।

× × × ×

हिन्दुस्तान के पास अगर कोई शक्ति है तो वह नैतिक शक्ति ही है। भौतिक शक्ति में तो दूसरे राष्ट्र हिन्दुस्तान से बहुत बढ़े हुए हैं। उस रास्ते से जाना हो तो उन राष्ट्रों के दास और शागिर्द बन के रहना पड़ेगा।

× × × ×

बापू ने जो विचार हमारे सामने रखा है उसका अगर हम आचरण करेंगे तो हिन्दुस्तान दुनियां का गुरु बनेगा। बापू के सन्देश की आज दुनियां को बहुत जरूरत है, उसके पालन से ही दुनियाँ में सुख और शान्ति बढ़ेगी।

× × × ×

शरीर की शक्ति क़ायम रखने के लिये हमें रोज खाना पड़ता है। आत्मा की शक्ति बढ़ाने और उसे क़ायम रखने के लिये तो चौबीस घंटे प्रार्थना की जरूरत है। जो वैसी प्रार्थना करते हैं, वे महान हैं। उतनी योग्यता जिनमें नहीं है वे दिन का कुछ समय तो प्रार्थना के लिये निकालें।

× × × ×

हम जितने काम करें, अगर पैसे के बिना वे पूरे न हो सकते हों तो हमें काम करना नहीं आता—ऐसा मानना चाहिये। सेवा के कार्यों के

लिये तो परिश्रम की, मेहनत की और बुद्धि की खास जरूरत होती है। पैसों का भी कुछ उपयोग हो सकता है। लेकिन पैसे का आश्रय नहीं होना चाहिए। हमारा कार्य स्वतन्त्र रूप से अपने ही आधार पर खड़ा होना चाहिये।

× × × ×

जिस पैसे को स्वीकार करने से पाप की प्रतिष्ठा बढ़ती है या दोषी जीवन का रंग चढना संभव है, ऐसा पैसा नहीं लेना चाहिये।

× × × ×

बुद्धि किसी के पास कम हो या किसी के पास ज्यादा, इसका महत्व नहीं। महत्व है स्वच्छ बुद्धि का। आग की एक छोटी सी भी चिनगारी हो तो वह कार्यकारी हो सकती है।

× × × ×

स्वतन्त्र वही हो सकता है जो अपना काम आप कर लेता है।

× × × ×

आज इन्सानियत हिन्दुओंने भी छोड़ी है और मुसलमानों ने भी छोड़ी है। दोनों झूठ बोलते हैं, खून करते हैं, गरीबों को चूसते हैं और फिर भी उनका धर्म नहीं बिगड़ता। धर्म की असली बात को छोड़कर वे धर्म के नाम पर धर्म-विरुद्ध आचरण कर रहे हैं। दया, प्रेम और सत्य यही सच्चा धर्म है। इन्सानियत बढ़ाना, प्रेम रखना यही धर्म का कार्य है।

× × × ×

सेवा-कार्य का पैसे से कम से कम सम्बन्ध है। पैसे से सार्वजनिक कार्य बिगड़ भी सकता है। उसका बहुत जाग्रत होकर उपयोग करना पड़ता है। सेवा के लिये पैसे की असली जरूरत नहीं होती। खास जरूरत है अपना संकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबों से एकरूप होने की।

× × × ×

हमें गरीबी का व्रत ले लेना चाहिये। गरीबी का मतलब है शरीर परिश्रम को अपनाना। शरीर-परिश्रम टालने से ही दुनियां में साम्राज्य शाही और दूसरी अनेक शाहियां पैदा हुई हैं। उन सब का हमें विरोध

करना है तो ग़रीबी को अपने जीवन में आरम्भ कर देना चाहिये। घर में चक्की न हो तो दाखिल कीजिये। चरखा शरीर-परिश्रम के लिये गाँधीजी ने बताया, जिसे वच्चा, बूढ़ा सब कोई चला सकता है। ग़रीबों से तन्मय होने की यही एक निशानी है।

× × × ×

जो मनुष्य के साथ दयालुता का बर्ताव नहीं करता और पत्थर की मूर्ति की पूजा करता है, वह ढोंगी कहा जा सकता है।

× × × ×

सेवा में वृत्ति जितनी निरहंकार रहेगी उतनी सेवा की कीमत वढ़ेगी। मैंने दस सेर सेवा की लेकिन चालीस सेर मेरा अहंकार रहा तो मेरी सेवा की कीमत १०/४० यानी चौथाई हो गई। इसके विपरीत एक मनुष्य ने एक तोला भर सेवा की, लेकिन उसका अहंकार शून्य है तो उसकी सेवा की कीमत ४ तोला यानी अनन्त हो गई।

× × × ×

भगवान का वैभव वढ़ाना, यही चीज मानव-देह में करने लायक़ है। वाणी से भगवान का गुणगान करें, हाथों से उनकी सेवा करें और अपनी वुद्धि को शुद्ध वनालें। वुद्धि की शुद्धि के लिये भगवान की भक्ति से वढ़कर कोई भी साधन आज तक अनुभव में नहीं आया।

× × × ×

किसी धर्म का किसी धर्म से विरोध नहीं है। सवका किसी से विरोध है तो वह अधर्म से। अधर्म का विरोध करने में सवको एक होना चाहिये।

× × × ×

जीवन एक आजमाइश है।....मनुष्य की कसौटी करने के लिये ईश्वर ने उसको दुनिया में भेजा है। भगवान पैसेवालों को और पैसा देकर आजमाता है कि वह अपने पैसे का उपयोग कैसे करता है, ग़रीवों को मदद पहुंचाता है या नहीं। भगवान ग़रीव को ग़रीव रखकर आजमाता है कि वह हिम्मत हारता है या नहीं।

× × × ×

जिसके दो बच्चे हैं, वह अपने तीन बच्चे हैं ऐसा समझें। यह तीसरा बच्चा मानो ग़रीब जनता। वह बच्चा दुनिया में पड़ा है इसके लिये अपनी सम्पत्ति का, बुद्धि का, समय का उतना हिस्सा दें तो सारा सवाल हल हो जाता है। घर में अगर नया बच्चा हुआ तो शिकायत तो नहीं करते बल्कि अपने जीवन को उस तरह ढ़ाल लेते हैं, वैसे ही ग़रीब जनता के लिये हम करेंगे तो अपरिग्रह का अच्छा आरम्भ होगा और उसकी व्याख्या करने की जरूरत नहीं रहेगी।

× × × ×

माता बच्चे को उठाने के लिए नीचे झुकती है, वैसे ही हमें नीचे झुकना चाहिये और नीचे वालों को ऊपर उठाना चाहिये, तभी विषमता मिटेगी, तभी सच्चा स्वराज्य आवेगा।

× × × ×

भक्ति-मार्गी भजन करते हैं, ध्यान योगी ध्यान में रमते हैं। ज्ञानी चिन्तन में मस्त हैं। पर ये सब ऐसा नहीं सोचते कि हमें रोज़ कुछ न कुछ खाने को लगता है तो कुछ पैदायश का काम भी करलें ताकि एक ही कर्म से चित्त-शुद्धि भी हो, भक्ति भी सधे और श्रमिकों का बोझ भी कुछ कम हो।

× × × ×

अगर हमें स्वराज्य को सम्पन्न बनाना है तो श्रम की प्रतिष्ठा भी बढ़ानी होगी। बढ़ई, प्रोफ़ेसर और न्यायाधीश के वेतन के भेद मिटाने होंगे। जिस तरह सूर्य सबको समान प्रकाश देता है, चन्द्र सबको समान रूप से शीतलता पहुँचाता है और पृथ्वी, हवा, पानी सब के लिये समान है वैसे ही आजीविका के साधन सबको समान रूप से मिलने चाहिए।

× × × ×

लोगों को डर लगता है और पूछते हैं कि सब समान होजायेंगे तो हम ऊँचे काम करने वाले हैं उनकी प्रतिष्ठा कैसे रहेगी? मैं पूछता हूँ कि आपने भगवान श्रीकृष्ण से तो ऊँचा काम नहीं किया है? कृष्ण से बढ़-

कर तो किसी ने हमें तत्वज्ञान नहीं दिया है। वह कृष्ण क्या करता था? ग्वालों के बीच काम करता था, गौवें चराता था, घोड़ों के खरहरा करता था। धर्मराज के यहां यज्ञ में उसने झूठन उठाने का काम अपने लिये माँगा था। हिन्दुस्तान का किसान गीता भी नहीं जानता है, परन्तु चार पाँच हजार वर्ष हुए तब से वह गोपालकृष्ण की जय बराबर करता जा रहा है। यह कैसे बना? क्योंकि उन्होंने देखा कि गोपाल कृष्ण ने तत्वज्ञान भी दिया, राज भी किया और मजदूरी का काम भी किया।

⁙ ⁙ ⁙ ⁙

वाणिज्य को गीता के अर्थ में अगर हम धर्म मान लेते हैं तो मुनाफ़े का सवाल ही नहीं उठता। किसान और आम जनता हमारी मालिक है और हमें मालिक की सेवा करनी है। इसलिए किसान या मजदूर जो कुछ निर्माण करता है उसके वितरण में हमें सिर्फ़ मेहनताना लेना है और हर वक्त यह सोचना है कि देश की सम्पत्ति कैसे बढ़ सकती है। आठ घंटे काम करके मजदूर केवल एक रुपया पावे और व्यापारी एक सौ, तो यह धर्म नहीं है। धर्मयुक्त व्यापार में न मुनाफ़ा होना चाहिये न घाटा। तराजू के पलड़े की तरह दोनों बाजू समान होनी चाहिये।

⁙ ⁙ ⁙ ⁙

दीनों की सेवा अगर उनकी दीनता क़ायम रखकर की जाती है तो यह ऊँचे दर्जे की सेवा नहीं कही जा सकती। जिस सेवा से उनकी दीनता मिटती है, वही सेवा सच्ची है।

⁙ ⁙ ⁙ ⁙

अगर हम मन्दिरों में अपने हरिजन भाइयों को प्रवेश देते हैं तो उन पर कोई उपकार नहीं करते, बल्कि भगवान के भक्तों को भगवान से दूर रखने के पाप से छुटकारा पा जाते हैं।

⁙ ⁙ ⁙ ⁙

हमारा स्वराज्य वैसा ही होगा जैसा हमारा 'स्व' होगा। इसलिये अगर स्वराज्य का आनन्द लूटना है तो स्व को परिशुद्ध करने की जरूरत है।

⁙ ⁙ ⁙ ⁙

भूदान-यज्ञ

अगर हम किसी को एक रोज भी खाना खिलाते हैं तो बहुत पुण्य मिलता है। एक रोज के अन्नदान का अगर इतना मूल्य है तो एक एकड़ जमीन का जिससे एक आदमी की सारी जिंदगी बसर हो सकती है, कितना मूल्य होगा ? इसलिए दरिद्रनारायण के वास्ते सब लोगों से कुछ-न-कुछ मिलना ही चाहिए। इसी का नाम यज्ञ है। इसलिए हरएक शख्स से मैं कहता हूँ कि भाई, मुझे कुछ-न-कुछ देदो। —विनोबा

अधिकांश लोग आज भूख से व्यथित हैं, खाने के लिये उनके पास पर्याप्त अन्न नहीं, रहने के लिये घर नहीं, काम करने के लिये साधन नहीं यह शोचनीय स्थिति आखिर कबतक रहेगी ? उसे क्यों रहने दिया जाय ? और रहने कौन देगा ?

भूदान-यज्ञ सब कर सकते हैं

आज सबका पहला फर्ज है कि गाँव-गाँव में भूमिहीनों के लिए अधिकार-पूर्वक जमीन की माँग करें। जिनके पास जरूरत से ज्यादा जमीनें हैं वे कर्तव्य-बुद्धि से उसमें से अधिकांश हिस्सा बे-जमीनवालों को समर्पित करें।

जिनके पास थोड़ी भी जमीन है, वे भी बे-जमीन वालो के प्रति अपनी सक्रिय सहानुभूति दिखलाने के लिए उसमें से कुछ जमीन उनके लिए अवश्य दें;

जिनके पास जमीन नहीं है पर धन दौलत है, वे जमीन खरीद कर दें, कुए बनवा दें, बैल जोड़ी, हल, बीज आदि साधनों का प्रबन्ध करदें।

जिनके पास जमीन और धन दोनों न हों, वे श्रम-दान दें, पड़त जमीन को दुरुस्त कर दें। भूदान के कार्यक्रमों में पैदल यात्रा आदि करके सहयोग दें। वकील लोग गरीब किसानो के सही मुकदमों को मुफ्त में पैरवी करें। लेखक भूदान पर लेख कविता आदि साहित्य लिखें तथा पढ़े लिखे प्रोफेसर, मास्टर तथा दूसरे लोग गावों में जाकर लोगों को व्याख्यानों द्वारा समझावें और सर्वोदय साहित्य का प्रचार करें ;

विनोबाजी का अगला क़दम—भूमिहीन जागृत हों

गाँव-गाँव में सभा करके ज़मीन की मांग करें

केवल जमीनवालों को समझाने से काम नहीं बनेगा, भूमिहीनों को भी उनका हक़ समझाना होगा और गाँव-गाँव में सभा करके मांग करनी होगी कि जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी परमेश्वर की पैदा की हुई है, उन पर सबका हक़ है, उसी तरह जमीन भी परमेश्वर की पैदा की हुई है, यह किसी ख़ास की मिल्कियत नहीं हो सकती। भूमि हमारी माता है और उसकी सेवा करने का हमारा हक़ है।

माँ और बच्चे में कितना स्नेह-सम्बन्ध है, पर फिर भी भूख लगने पर बच्चा जब रोता है, तब माँ का ध्यान उसकी तरफ़ जाता है और वह उसे दूध पिलाती है। उसी तरह भूमिहीनों को भी आवाज उठानी चाहिये।

विनोबाजी क्या चाहते हैं ?

(१) भूदान-यज्ञ से साम्ययोग—पहले कदम के बतौर अपने परिवार के एक हिस्से की जमीन दें फिर पूरा का पूरा गाँव अपनी सारी जमीन समर्पण कर एक ही कुटुम्ब बने।

(२) क्रियात्मक उपासना—नित्य हर एक अपने घर पर प्रार्थना करे और सप्ताह में कम से कम एक बार सब वर्ग के लोग स्त्री-पुरुष मिलकर सामूहिक प्रार्थना करें।

(३) जीवन-शोधन—अपने आचार-विचार, साधन और व्यवहार शुद्ध रक्खें। शरीरश्रम का व्रत लें। दुःखी लोगों की सेवा करें।

(४) विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था—गाँव में होने वाले कच्चे माल से गांव में ही पक्का माल बनावें। जहां तक सम्भव हो अपने जरूरत की चीजें गांव में ही पैदा करें। खादी उत्पत्ति को ग्रामोद्योग का राजा समझें। हाथचक्की, तेलघानी, आदि का उपयोग करें।

भूमि दान दो—भूमि दान दो

प्रभु ने देकर जन्म सभी को, एक समान संवारा है।
पृथ्वी, पानी पवन सभी पर, अधिकार हमारा है॥
भेद-भाव मिट गया, बह रही विमल प्रेम की धारा है।
भूमि-दान दो, भूमि-दान दो यही हमारा नारा है॥
सत्य अहिंसा द्वारा होंगे, सारे काम हमारे।
दो भूमि-दान तुम प्यारे, भारत के राज दुलारे॥

भूमिदान यज्ञ के नारे

१. जमीन किसकी	जो जोतेगा उसकी।
२. क़दम बढ़ेंगे कैसे	क्रांति से, पर शान्ति से।
३. यह होगा कैसे	समझाकर प्रेम से।
४. जमीन पर सब का हक़ है	जमाने की मांग है।
५ हवा पानी सभी को	वैसे जमीन हर एक को।
६. महनत जिसकी	दौलत उसकी।
७. जागृत जनता दुःख न सहेगी	धन व धरती बँटकर रहेगी
८. हमारे गाँव में बे-जमीन	कोई न रहेगा।

आज हमारा हिन्दुस्तान सामाजिक असन्तोष और आर्थिक विषमता के जाल में फंस गया है। उसमें से सही सलामत बच निकलने के लिये ही यह भूदान-यज्ञ आन्दोलन है। अगर हमारे यहां समाज-रचना में परिवर्तन नहीं होता है तो हम नष्ट हो जायेंगे।

देश को हिंसात्मक क्रांति से बचाने के लिये अपनी आवश्यकता से अधिक जमीन भूमि-हीनों को देकर पुण्य के भागी बनिये।

पेट भर खाओ, पर पेटी भर मत रखो

भूखे को एक दिन खाना खिलाने से पुण्य होता है, पर रोज़ रोज़ कौन खिला सकता है? इसलिये गरीबों को काम दो, जमीन दो और काम करने के साधन दो।

भूमिदान-यज्ञ

आज इक फ़कीर की जो भूमि की पुकार है ,
पुकार है यह दीन की, यह देश की पुकार है,
पुकार दीन-हीन की न अब भुलायेंगे ।
भूमि-दान -यज्ञ हम सफल बनायेंगे ।।
बापू की थी जो कल्पना वह सत्य की स्वराज्य की,
यह संत जोड़ने चला लड़ी यह राम-राज्य की,
सन्त के क़दम पै हम क़दम बढ़ायेंगे । भूमिदान..
आज है चतुर दिशा में गूंज साम्यवाद की,
क़त्ल से, क़ानून से, खूनी क्रान्ति-नाद की,
किन्तु हम तो करुणा का ही पन्थ बनायेंगे । भूमिदान..
प्रेम से हो भूमिदान, प्रेम से ही क्रान्ति हो,
विश्व के कलह मिटें फिर सदा की शान्ति हो,
हम मनुज को शान्ति की सुधा पिलायेंगे । भूमिदान..
जिसके भूमि है नहीं उसे भी भूमि चाहिये,
सबको वायु चाहिये सबको आयु चाहिये,
अब किसी के भाग को हम न दबायेंगे । भूमिदान..
भूमिदान मांगना न भीख का प्रकार है,
जिसके भूमि है नहीं उसे भी स्वाधिकार है,
भूमि देके अपना फर्ज हम निभायेंगे । भूमिदान..
सबके पास हो धरा, सभी के पास धाम हो,
सबको अन्न वस्त्र हो, सभी के पास काम हो,
हम सदा सभी का ही उदय मनायेंगे । भूमिदान..
सत्य शान्ति की दिशा में यह नया प्रयोग है,
सत्य का प्रयास है, यह एक शुभ संयोग है,
उठ पडो भारतीय, जग जगायेंगे । भूमिदान..

—रघुराजसिंह

भूदान-यज्ञ के दान-पत्र का नमूना

मैं/हम······ ···गाँव······ ···तहसील············

जिला·· ······सूबा····· ·का/के निवासी मेरी/हमारी माल की

की कुल · ···एकड़ जमीन में से, जिन पर पूरा कानूनी हक मेरा/

हमारा है, खुश्की जमीन ····· ·एकड़··········डेसिमल······

सर्वे नम्बर······ ···, तरी जमीन··· ··· ··एकड़ ·· ··

डेसिमल······सर्वे नम्वर······गाँव········नंबर··· ··

तहसील········ ·जिला··· ·······सूबा ·········वाली

जमीन पूज्य विनोबाजी द्वारा शुरू किये गये भू-दान-यज्ञ में विचार-पूर्वक अपनी राजी खुशी से दान दे रहा हूँ/रहे हैं। इस दान में दी हुई जमीन पर आइन्दा मेरा/हमारा या मेरे/हमारे खानदान या वारिसान का कोई हक या दावा नहीं रहेगा। यह जमीन ग़रीबों की भलाई के लिये पूज्य विनोबाजी चाहें जिस तरह उपयोग में ला सकते हैं।

मुकाम············पोस्ट·····जिला······ ·.. तारीख··

दाता का पूरा नाम, पता व हस्ताक्षर व तारीख··············

गवाह का पूरा नाम व पता, हस्ताक्षर व तारीख·············

तफसील जमीन

गाँव··· ······ सब रजिस्ट्री··· ········ चौहद्दी :

तौजी नं०·· ·· सब डिवीजन·········· उत्तर········

थाना········ जिला·············· दक्षिण········

थाना नं०······ राज्य·············· पूर्व··········

परगना········ खाता नं०··········· पश्चिम···· ··

पोस्ट·· ······ खेसरा नं०············

सम्पत्ति-दान-यज्ञ के दान-पत्र का नमूना

पूज्य विनोबाजी,

भारतीय परम्परा के अनुसार आर्थिक क्रांति की अहिंसक प्रक्रिया को संपूर्ण रूप देने की दृष्टि से अब लोगों से आपने भूमि के अलावा अपनी सम्पत्ति का भी षष्ठांश देने की मांग की है। भूमि-दान-यज्ञ में जो लोग भूमि न होने के कारण विशेष सहयोग नहीं दे सकते थे, उनके लिये भी अब आपने रास्ता खोल दिया है। दरिद्रनारायण के लिए किये गये आपके इस आवाहन पर मैं अपनी आय का ·······वाँ हिस्सा आपको अर्पित करता हूँ तथा हर साल आपके निर्देशानुसार मैं इसका विनियोग सार्वजनिक कार्य के लिये करूँगा तथा उसके खर्च का वार्षिक हिसाब आपको या आपके प्रतिनिधि या जिस समिति को आप अधिकार दें, उसको मैं नियमित रूप से भेजता रहूँगा।

ऊपर लिखे हुए हिस्से की सारी रकम सुरक्षित रखने तथा आपके निर्देशानुसार खर्च करने की जिम्मेदारी मैं मान्य करता हूँ।

अपने नियम का साक्षी अन्तर्यामी रूप में स्वयं मैं ही हूँ तथा मैं अपनी अन्तरात्मा से वफ़ादार रहूँगा। ईश्वर मुझे बल दे।

मेरी सम्पत्ति आदि का ब्यौरा साथ में दिया है।

तारीख········ हस्ताक्षर································

पूरा नाम-पता··

आय का ब्यौरा अंदाज रुपये·············वार्षिक/मासिक में से ······वें हिस्से की रक़म········वार्षिक/मासिक देता रहूँगा।

सूचना—जो भाई भूमि-दान या सम्पत्ति-दान या दोनों तरह के दान देकर महा पुण्य के भागीदार बनना चाहें वे इन नमूनों की नक़ल बड़े क़ाग़ज़ पर करके साफ़-साफ़ अक्षरों में दान-पत्र भरकर विनोबाजी के पास या प्रांतीय भूदान समिति के कार्यालय में अथवा सर्व सेवा संघ, भूदान कार्यालय, गया (बिहार) के पते पर भेज दें।

हिन्दी साहित्य मंदिर अजमेर में मिलने वाली पुस्तकें

१. गांधी चित्रावली (१०० चित्र) १)
२. नेहरू चित्रावली (६० चित्र) १)
३. विनोबा चित्रावली (५६ चित्र) ॥।)
४. रामनाम की महिमा (म० गांधी) १)
५. तपोधन विनोबा (बड़ी जीवनी) २)
६. विश्व की महान महिलाएँ (सचित्र) २)
७. स्कूल में फलवाग १॥।)

विनोबा साहित्य

८. गीता प्रवचन सादी १) सजिल्द १॥।)
९. सर्वोदय विचार १=)
१०. स्थितप्रज्ञ दर्शन १)
११. जीवन और शिक्षण २)
१२. ईशावास्यवृत्ति ॥।)
१३. विचार-पोथी १)
१४. शांति यात्रा १॥)
१५. स्वराज्य शास्त्र ॥।)
१६. विनोबा के विचार (दो भाग) ३)

बारह आना